हिंदी

सुगमभारती

पाँचवीं कक्षा

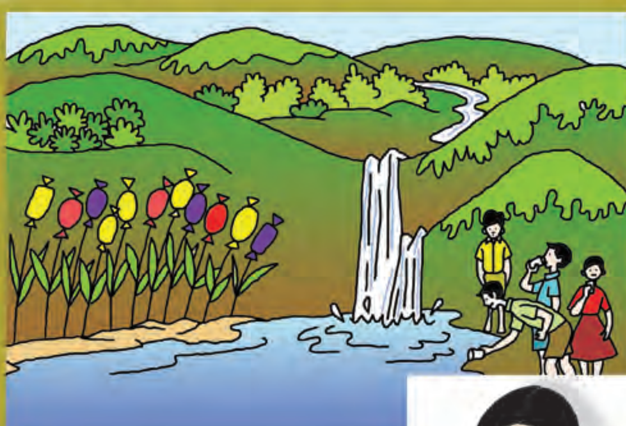

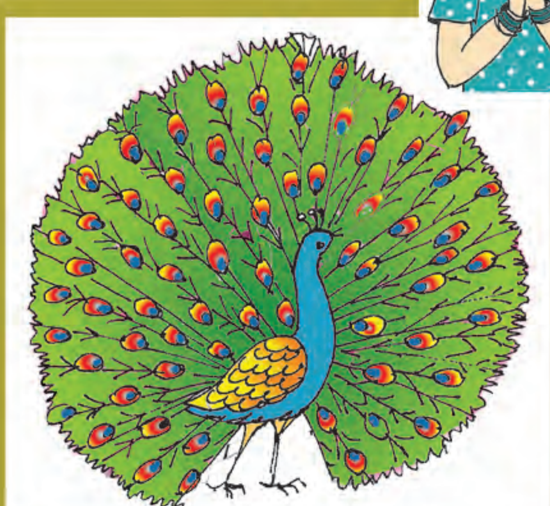

भारत का संविधान

भाग 4 क

मूल कर्तव्य

अनुच्छेद 51 क

मूल कर्तव्य– भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह –

(क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्र ध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे;

(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करें;

(ग) भारत की प्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण रखें;

(घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे;

(ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभावों से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो स्त्रियों के सम्मान के विरुद्ध है;

(च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्त्व समझे और उसका परिरक्षण करे;

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे;

(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करें;

(झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे;

(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत प्रयास करे जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू ले;

(ट) यदि माता-पिता या संरक्षक है, छह वर्ष से चौदह वर्ष तक की आयु वाले अपने, यथास्थिति, बालक या प्रतिपाल्य के लिए शिक्षा के अवसर प्रदान करे ।

दो शब्द

यह पाठ्यपुस्तक विद्यार्थियों के पूर्व ज्ञान को दृष्टि में रखते हुए भाषा के नवीन एवं व्यावहारिक प्रयोगों तथा विविध मनोरंजक विषयों के साथ आपके सम्मुख प्रस्तुत है । पाठ्यपुस्तक को स्तरीय (ग्रेडेड) बनाने हेतु दो भागों में विभाजित करते हुए उसका 'सरल से कठिन की ओर' क्रम रखा गया है । यहाँ विद्यार्थियों के पूर्व अनुभव, घर-परिवार, परिसर को आधार बनाकर श्रवण, भाषण- संभाषण, वाचन, लेखन के भाषाई मूल कौशलों के साथ भाषा प्रयोग और व्यावहारिक सृजन पर विशेष बल दिया गया है । इसमें स्वयं अध्ययन एवं चर्चा को प्रेरित करने वाली रंजक, आकर्षक, सहज और सरल भाषा का प्रयोग किया गया है ।

पाठ्यपुस्तक में आए शब्दों और वाक्यों की रचना हिंदी की व्यावहारिकता को ध्यान में रखकर की गई है । इसमें क्रमिक एवं श्रेणीबद्‌ध कौशलाधिष्ठित अध्ययन सामग्री, अध्यापन संकेत, अभ्यास और उपक्रम भी दिए गए हैं । विद्यार्थियों के लिए लयात्मक कविता, बालगीत, कहानी, संवाद आदि विषयों के साथ-साथ चित्रवाचन, देखो और सुनो, पढ़ो, देखो और बनाओ, देखो और करो, समझो, अनुरेखन, अनुलेखन, सुलेखन, श्रुतलेखन आदि कृतियाँ भी दी गई हैं ।

शिक्षकों एवं अभिभावकों से यह अपेक्षा है कि अध्ययन-अनुभव देने के पहले पाठ्यपुस्तक में दिए गए अध्यापन संकेत एवं दिशा निर्देशों को अच्छी तरह समझ लें । सभी कृतियों का विद्यार्थियों से अभ्यास करवाएँ । आवश्यकतानुसार मार्गदर्शन करें । शिक्षक एवं अभिभावक पाठ्यपुस्तक में दिए गए 'शब्दार्थ' का उपयोग करें । 'पहचान हमारी' के सभी भागों में नीचे दिए गए 'पढ़ो' के शब्दों के अर्थ बताना अपेक्षित नहीं है । लयात्मक, ध्वन्यात्मक शब्दों का अपेक्षित उच्चारण एवं दृढ़ीकरण करना आवश्यक है । इस पाठ्यपुस्तक में लोक प्रचलित तद्‌भव शब्दों का प्रयोग किया गया है । इनसे विद्यार्थी सहज रूप में परिचित और अभ्यस्त होते हैं । इनके माध्यम से मानक शब्दावली का अभ्यास करना सरल हो जाता है ।

आवश्यकतानुसार पाठ्येतर कृतियों, खेलों, संदर्भों, प्रसंगों का समावेश करें । शिक्षक एवं अभिभावक पाठ्यपुस्तक के माध्यम से जीवन मूल्यों, जीवन कौशलों, मूलभूत तत्त्वों के विकास का अवसर विद्यार्थियों को प्रदान करें । पाठ्यसामग्री का मूल्यांकन निरंतर होने वाली प्रक्रिया है। इससे विद्यार्थी परीक्षा के तनाव से मुक्त रहेंगे । पाठ्यपुस्तक में अंतर्निहित सभी क्षमताओं-श्रवण, भाषण-संभाषण, वाचन, लेखन, कार्यात्मक व्याकरण (भाषा प्रयोग) और व्यावहारिक सृजन का सतत मूल्यमापन अपेक्षित है ।

विश्वास है कि आप सब अध्ययन-अध्यापन में पाठ्यपुस्तक का उपयोग कुशलतापूर्वक करेंगे और हिंदी विषय के प्रति विद्यार्थियों में अभिरुचि और आत्मीयता की भावना जागृत करते हुए उनके सर्वांगीण विकास में सहयोग देंगे ।

शिक्षा विभाग का स्वीकृति क्रमांक : प्राशिसं/२०१४-१५/६३७/मंजूरी/ड-५०५/३४३ दिनांक :- १३/०१/२०१५

हिंदी

सुगमभारती

पाँचवीं कक्षा

महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे

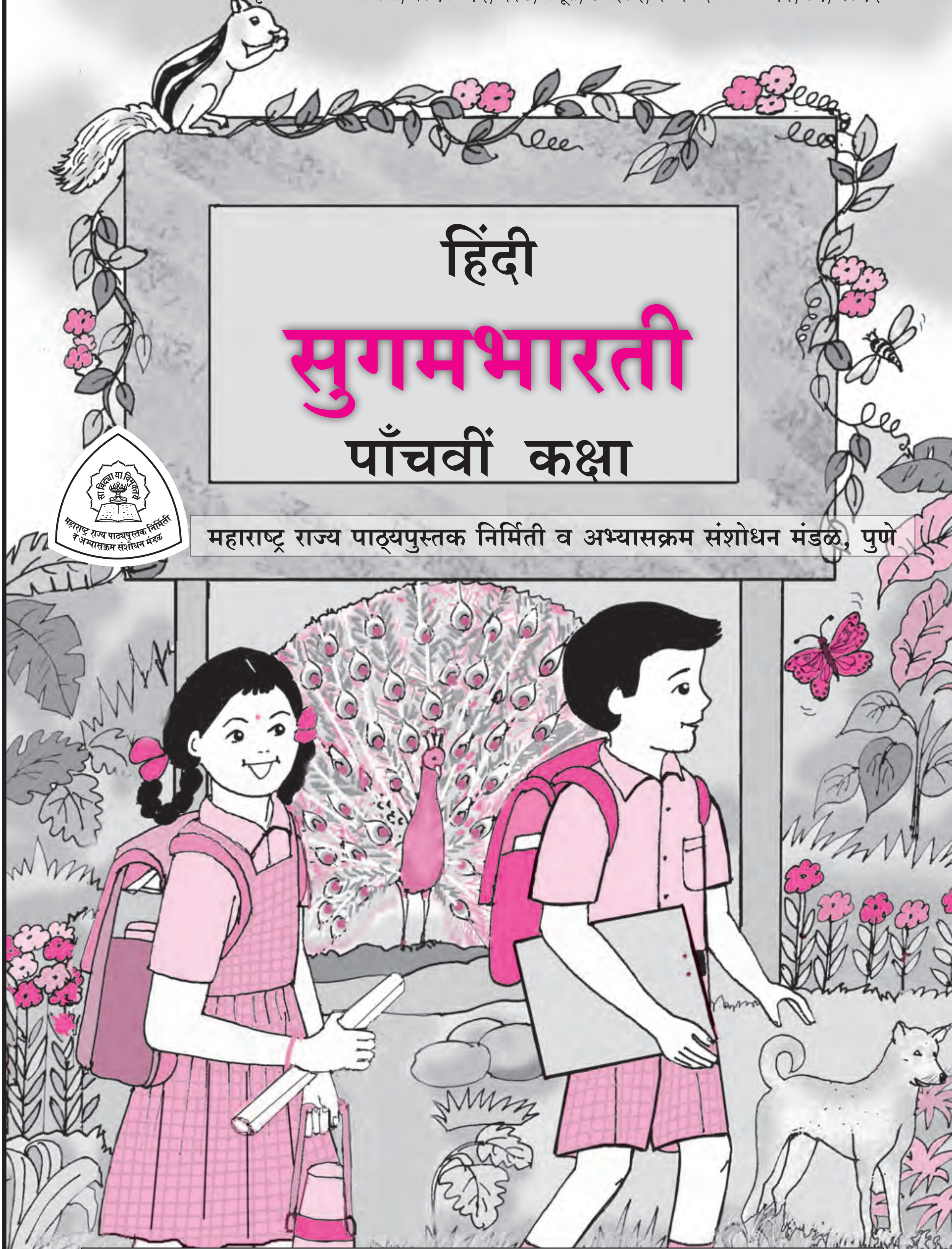

JUSIP2

आपके स्मार्टफोन में 'DIKSHA App' द्‍वारा, पुस्तक के प्रथम पृष्ठ पर Q.R.Code के माध्यम से डिजिटल पाठ्‍यपुस्तक एवं प्रत्येक पाठ में अंतर्निहित Q.R.Code में अध्ययन अध्यापन के लिए पाठ से संबंधित उपयुक्त दृक्-श्राव्य सामग्री उपलब्ध कराई जाएगी ।

प्रथमावृत्ति : २०१५
सातवाँ पुनर्मुद्रण : २०२२

© महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे - ४११००४

इस पुस्तक का सर्वाधिकार महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ के अधीन सुरक्षित है । इस पुस्तक का कोई भी भाग महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ के संचालक की लिखित अनुमति के बिना प्रकाशित नहीं किया जा सकता ।

हिंदी भाषा समिति

डॉ. चंद्रदेव कवडे-अध्यक्ष, डॉ. हेमचंद्र वैद्य-सदस्य,
डॉ. साधना शाह-सदस्य, श्री रामनयन दुबे-सदस्य,
श्री रामहित यादव-सदस्य, श्री कौशल पांडेय-सदस्य,
प्रा. मैनोद्दीन मुल्ला-सदस्य,
डॉ. अलका पोतदार-सदस्य-सचिव

हिंदी भाषा कार्यगट

डॉ. रामजी तिवारी, डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे,
प्रा. अनुया दळवी, श्री संजय भारद्वाज,
डॉ. सरजूप्रसाद मिश्र, डॉ. दयानंद तिवारी,
श्री अनुराग त्रिपाठी, श्री राजेंद्रप्रसाद तिवारी,
श्री उमाकांत त्रिपाठी, प्रा. निशा बाहेकर,
डॉ. आशा मिश्रा, डॉ. संतोषकुमार यशवंतकर,
श्रीमती मंगला पवार, श्री नरसिंह तिवारी

संयोजन :
डॉ. अलका पोतदार, विशेषाधिकारी हिंदी,
पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे

संयोजन सहायक :
सौ. संध्या विनय उपासनी, विषय सहायक हिंदी,
पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे

मुखपृष्ठ : राजेश लवळेकर

चित्रांकन : लीना माणकीकर, राजेश लवळेकर,
मंगेश किरवडकर

निर्मिति :
श्री सच्चितानंद आफळे, मुख्य निर्मिति अधिकारी
श्री संदीप आजगांवकर, निर्मिति अधिकारी

अक्षरांकन : भाषा विभाग, पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे

कागज : ७० जीएसएम, क्रीमवोव

मुद्रणादेश : N/PB/2022-23/QTY.

मुद्रक : M/s

प्रकाशक :
श्री विवेक उत्तम गोसावी, नियंत्रक,
पाठ्यपुस्तक निर्मिती मंडळ, प्रभादेवी, मुंबई-२५

प्रस्तावना

'बच्चों का निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षाधिकार अधिनियम २००९ और राष्ट्रीय पाठ्यक्रम प्रारूप -२००५' दृष्टिगत रखते हुए राज्य की 'प्राथमिक शिक्षा पाठ्यचर्या-२०१२' तैयार की गई । इस पाठ्यचर्या पर आधारित हिंदी द्वितीय भाषा (संयुक्त) 'सुगमभारती' की पाठ्यपुस्तक 'मंडळ' प्रकाशित कर रहा है । पाँचवीं कक्षा की यह पुस्तक आपके हाथों में सौंपते हुए हमें विशेष आनंद हो रहा है ।

हिंदीतर विद्यालयों में पाँचवीं कक्षा हिंदी शिक्षा का प्रथम सोपान है । पाँचवीं कक्षा के विद्यार्थियों की सीखने की प्रक्रिया सहज-सरल बनाने के लिए इस बात का ध्यान रखा गया है कि यह पुस्तक चित्ताकर्षक, चित्रमय, कृतिप्रधान और बालस्नेही हो । विद्यार्थियों की अभिरुचि को ध्यान में रखकर हिंदी भाषा शिक्षा मनोरंजक एवं आनंददायी बनाने के लिए योग्य बालगीत, कविता, चित्रकथा और रंगीन चित्रों का समावेश किया गया है । पाठ्यपुस्तक में अन्य विषयों को भाषाई दृष्टि से समाविष्ट किया गया है । इन घटकों के अध्यापन के समय विद्यार्थियों के लिए अध्ययन-अनुभव के नियोजन में शालाबाह्य जगत एवं दैनिक व्यवहार से जुड़ी बातों को जोड़ने का प्रयास किया गया है । व्याकरण को भाषा प्रयोग के रूप में दिया गया है ।

शिक्षक एवं अभिभावकों के मार्गदर्शन के लिए सूचनाएँ 'दो शब्द' तथा प्रत्येक पृष्ठ पर दी गई हैं । अध्ययन-अध्यापन की प्रकिया में ये सूचनाएँ निश्चित उपयोगी होंगी ।

हिंदी भाषा समिति, कार्यगट और चित्रकारों के निष्ठापूर्ण परिश्रम से यह पुस्तक तैयार की गई है । पुस्तक को दोषरहित एवं स्तरीय बनाने के लिए राज्य के विविध भागों से आमंत्रित शिक्षकों, विशेषज्ञों द्वारा पुस्तक का समीक्षण कराया गया है । समीक्षकों की सूचना और अभिप्रायों को दृष्टि में रखकर हिंदी भाषा समिति ने पुस्तक को अंतिम रूप दिया है । 'मंडळ' हिंदी भाषा समिति, कार्यगट, समीक्षकों, चित्रकारों तथा गुणवत्ता परीक्षक डॉ. प्रमोद शुक्ल के प्रति हृदय से आभारी है । आशा है कि विद्यार्थी, शिक्षक, अभिभावक सभी इस पुस्तक का स्वागत करेंगे ।

पुणे
दिनांक :-
२० दिसंबर २०१४
मार्गशीर्ष कृ. १३
शके १९३६

(चं. रा. बोरकर)
संचालक
महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व
अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ पुणे-०४

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक **संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य** बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म

और उपासना की **स्वतंत्रता,**

प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन सब में

व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता

और अखंडता सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) **को एतद् द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं ।**

राष्ट्रगीत

जनगणमन – अधिनायक जय हे
भारत – भाग्यविधाता ।
पंजाब, सिंधु, गुजरात, मराठा,
द्राविड, उत्कल, बंग,
विंध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा,
उच्छल जलधितरंग,
तव शुभ नामे जागे, तव शुभ आशिस मागे,
गाहे तव जयगाथा,
जनगण मंगलदायक जय हे,
भारत – भाग्यविधाता ।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय, जय हे ।।

प्रतिज्ञा

भारत मेरा देश है । सभी भारतीय मेरे भाई–बहन हैं ।

मुझे अपने देश से प्यार है । अपने देश की समृद्ध तथा विविधताओं से विभूषित परंपराओं पर मुझे गर्व है ।

मैं हमेशा प्रयत्न करूँगा/करूँगी कि उन परंपराओं का सफल अनुयायी बनने की क्षमता मुझे प्राप्त हो ।

मैं अपने माता–पिता, गुरुजनों और बड़ों का सम्मान करूँगा/करूँगी और हर एक से सौजन्यपूर्ण व्यवहार करूँगा/करूँगी ।

मैं प्रतिज्ञा करता/करती हूँ कि मैं अपने देश और अपने देशवासियों के प्रति निष्ठा रखूँगा/रखूँगी । उनकी भलाई और समृद्धि में ही मेरा सुख निहित है ।

हिंदी अध्ययन निष्पत्ति : पाँचवीं कक्षा (सुगमभारती)

अध्ययन के लिए सुझाई हुई शैक्षणिक प्रक्रिया	अध्ययन निष्पत्ति
सभी विद्‌यार्थियों (भिन्न रूप से सक्षम विद्‌यार्थियों सहित) को व्यक्तिगत, सामूहिक रूप से कार्य करने के अवसर और प्रोत्साहन दिया जाएँ, ताकि उन्हें – • विभिन्न विषयों, स्थितियों, घटनाओं, अनुभवों, कहानियों, कविताओं आदि को अपने तरीके और अपनी भाषा में (मौखिक/लिखित/सांकेतिक रूप से) कहने-सुनाने/प्रश्न पूछने, टिप्पणी करने, अपनी राय देने की आजादी हो । • पुस्तकालय/कक्षा में अलग-अलग तरह की कहानियाँ, कविताएँ अथवा/बाल साहित्य, स्तरानुसार सामग्री, साइन-बोर्ड, होर्डिंग, समाचार पत्र की कतरनें उनके आसपास के परिवेश में उपलब्ध हों और उन पर चर्चा करने के मौके हों । • तरह-तरह की कहानी, कविताओं, पोस्टर आदि को संदर्भ के अनुसार पढ़कर समझने-समझाने के अवसर उपलब्ध हों । • सुनी, देखी, पढ़ी बातों को अपने तरीके से, अपनी भाषा में लिखने के अवसर हों। • जरूरत और संदर्भ के अनुसार अपनी भाषा गढ़ने (नए शब्द/वाक्य/अभिव्यक्तियाँ बनाने) और उनका प्रयोग करने के अवसर हों । • एक-दूसरे की लिखी हुई रचनाओं को सुनने, पढ़ने और उस पर अपनी राय देने, उसमें अपनी बात को जोड़ने, बढ़ाने और अलग-अलग ढंग से लिखने के अवसर हों । • आसपास होने वाली गतिविधियों/घटने वाली घटनाओं को लेकर प्रश्न करने, विद्‌यार्थियों से बातचीत या चर्चा करने, टिप्पणी करने, राय देने के अवसर उपलब्ध हों । • विषयवस्तु के संदर्भ में भाषा की बारीकियों और उसकी नियमबद्‌ध प्रकृति को समझने और उनका प्रयोग करने के अवसर हों । • नए शब्दों को चित्र शब्दकोश/शब्दकोश में देखने के अवसर उपलब्ध हों । • अन्य विषयों, व्यवसायों, कलाओं आदि । (जैसे – गणित, विज्ञान, सामाजिक अध्ययन, नृत्यकला, चिकित्सा आदि) में प्रयुक्त होने वाली शब्दावली को समझने और उसका संदर्भ एवं स्थिति के अनुसार प्रयोग करने के अवसर हों । • पाठ्‌यपुस्तक और उससे इतर सामग्री में आए प्राकृतिक, सामाजिक एवं अन्य संवेदनशील मुद्‌दों को समझने और उन पर चर्चा करने के अवसर उपलब्ध हों ।	**विद्‌यार्थी –** 05.LB.01 अपने आसपास घटने वाली विभिन्न घटनाओं की बारीकियों पर ध्यान देते हुए उन पर मौखिक रूप से अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं / प्रश्न पूछते हैं । 05.LB.02 विभिन्न स्थितियों और उद्‌देश्यों (सूचना फलक पर लगाई जाने वाली सूचना, कार्यक्रम की रिपोर्ट, जानकारी आदि प्राप्त करने के लिए) के लिए पढ़ते और लिखते हैं । 05.LB.03 सुनी अथवा पढ़ी रचनाओं (हास्य, साहसिक, सामाजिक आदि विषयों पर आधारित कहानी, कविता आदि) की विषयवस्तु, घटनाओं, चित्रों और पात्रों, शीर्षक आदि के बारे में बातचीत करते हैं / प्रश्न पूछते हैं / अपनी बात के लिए तर्क देते हैं / निष्कर्ष निकालते हैं । 05.LB.04 अपरिचित शब्दों के अर्थ शब्दकोश से खोजते हैं । 05.LB.05 अंग्रेजी शब्दों / वाक्यों का देवनागरी में लिप्यंतरण करते हैं । 05.LB.06 देवनागरी में लिखे शब्दों / वाक्यों का अंग्रेजी में लिप्यंतरण करते हैं । 05.LB.07 मुहावरे-कहावतों का अपनी बोलचाल तथा लेखन में सार्थक प्रयोग करते हैं । 05.LB.08 भाषा की बारीकियों पर ध्यान देते हुए अपनी भाषा गढ़ते हैं और उसे अपने लेखन में / ब्रेल लिपि में शामिल करते हैं । 05.LB.09 भाषा की व्याकरणिक इकाइयों (जैसे – कारक चिह्‌न, क्रिया, काल, विलोम आदि) की पहचान करते हैं और उनके प्रति सचेत रहते हुए लिखते हैं । 05.LB.10 विभिन्न उद्‌देश्यों के लिए लिखते हुए अपने लेखन में विरामचिह्‌नों जैसे – पूर्ण विराम, अल्प विराम, प्रश्नवाचक चिह्‌न, उद्‌धरण चिह्‌न का सचेत प्रयोग करते हैं । 05.LB.11 पाठ्‌यपुस्तक और उससे इतर सामग्री में आए संवेदनशील बिंदुओं पर लिखित / ब्रेल लिपि में अभिव्यक्ति करते हैं । 05.LB.12 अपनी कल्पना से कहानी, कविता, पत्र आदि लिखते हैं । कविता, कहानी को आगे बढ़ाते हुए लिखते हैं ।

* अनुक्रमणिका *

पहली इकाई

क्र.	पाठ का नाम	पृष्ठ क्र.
*	आओ खेलें	१
१.	वन की सैर	२
२.	हवा	३
३.	विचित्र आदमी	४
४.	कश्मीरा	५
५.	पहचान हमारी- भाग (१)	६,७
६.	बधाई कार्ड	८
७.	करो और जानो	९
८.	माँ	१०
९.	मोती जैसे दाँत	११
१०.	मित्रता	१२
११.	पहचान हमारी- भाग (२)	१३,१४
१२.	व्यायाम	१५
१३.	बोलो और जानो	१६
*	पुनरावर्तन १,२	१७,१८

दूसरी इकाई

क्र.	पाठ का नाम	पृष्ठ क्र.
१.	गाँव और शहर	१९
२.	लालची कुत्ता	२०
३.	खिचड़ी	२१
४.	रोबोट	२२
५.	जुड़ें हम	२३,२४
६.	बोध	२५
७.	मुझे पहचानो	२६
८.	मुझे जानो	२७
९.	भारत	२८
१०.	उलझन	२९
११.	राष्ट्रीय त्योहार	३०
१२.	हम अलग - रूप एक	३१
१३.	(अ) समान - विरुद्ध	३२
	(ब) छुक-छुक गाड़ी	३३
१४.	निरीक्षण	३४
१५.	चलो-चलें	३५
*	पुनरावर्तन ३,४	३६,३७
*	शब्दार्थ, उत्तर	३८

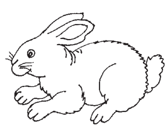

- **पहचानो और बताओ :**

आओ खेलें

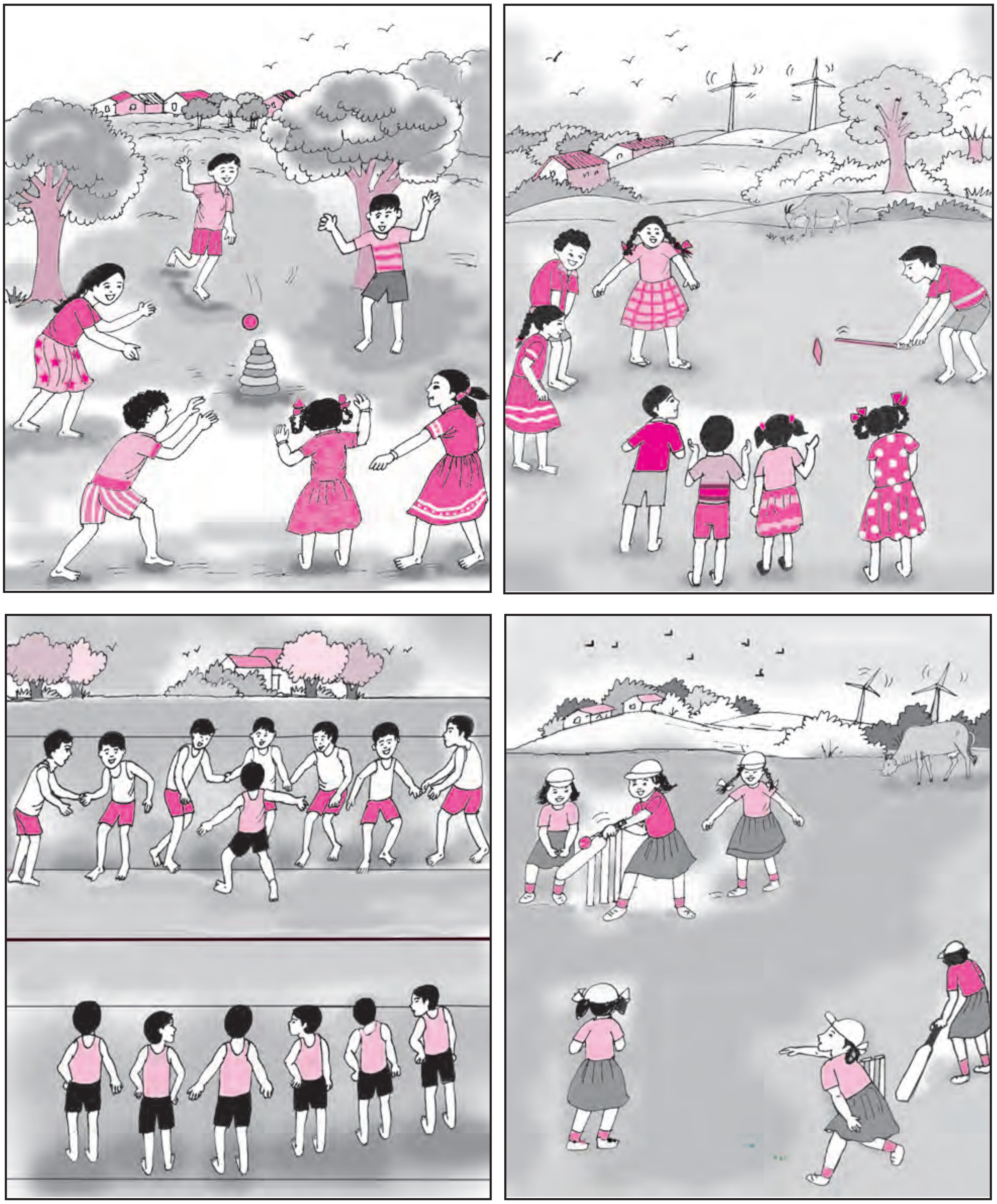

❑ **अध्यापन संकेत :** विद्‍यार्थियों से पूछें कि वे कौन-से खेल खेलते हैं । चित्रों का निरीक्षण करवाकर उनपर चर्चा कराएँ । प्रत्येक विद्‍यार्थी को बोलने का अवसर दें । उनके पूर्वानुभव की जानकारी प्राप्त करें, इससे अध्ययन-अनुभव में सहायता मिलेगी ।

● देखो, बताओ और कृति करो :

पहली इकाई

१. वन की सैर

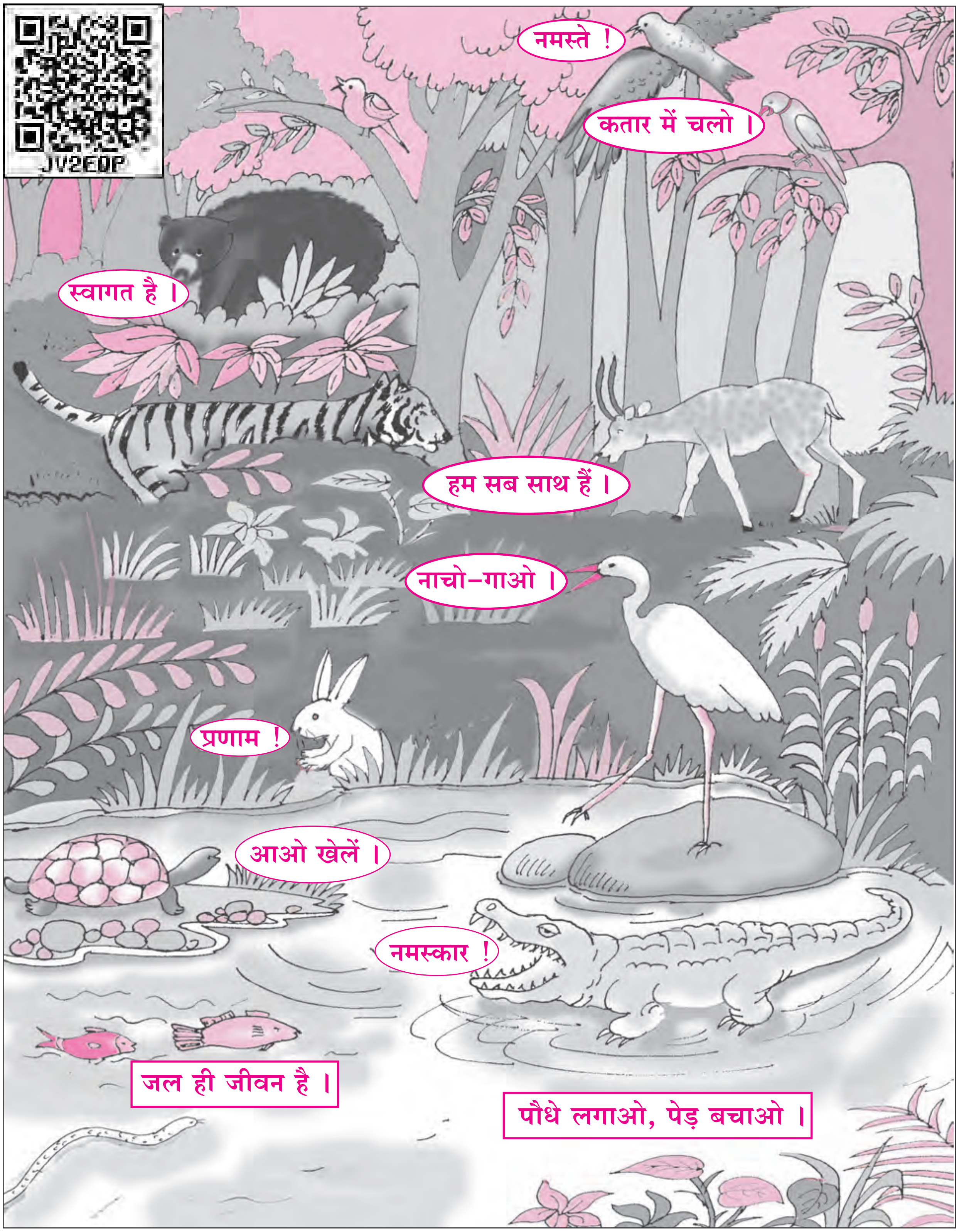

❑ चित्र के प्राणियों की कृतियों पर चर्चा कराएँ । विद्‌यार्थियों से अन्य परिचित प्राणियों के नाम पूछें और उनकी बोलियाँ बुलवाएँ । प्रणाम, स्वागत आदि की सामूहिक एवं एकल रूप में कृतियाँ करवाएँ । चित्र के वाक्यों को सुनाकर उनपर विद्‌यार्थियों से चर्चा करें ।

● **सुनो और साभिनय गाओ :**

२. हवा

झूम-झूमकर, नाच-नाचकर,
कलियों संग इठलाती है ।

हलकी-फुलकी, नटखट, चंचल,
सबके घर घुस जाती है ।

ठुमक-ठुमककर, मटक -मटककर,
नदी-लहर संग बल खाती है ।

जंगल, पर्वत, खेत, गाँव में,
गीत नए लिख जाती है ।

चिड़ियों के नन्हे बच्चों को,
गोद लिए दुलराती है ।

सुबह-सवेरे, तड़के-तड़के,
आकर हमें जगाती है ।

– *केदारनाथ 'कोमल'*

१. कविता में आए लयात्मक शब्दों को ढूँढ़कर सुनाओ ।
२. शब्दयुग्म सुनो, समझो और दोहराओ :
हलकी-फुलकी, तड़के-तड़के, घर-द्‌वार, नदी-नाले, खेत-खलिहान, गाँव-शहर, कली-वली ।

❑ पूरी कविता उचित हाव-भाव, लय, गति, उच्चारण के साथ सुनाएँ । दो-दो पंक्तियाँ सुनाकर विद्‌यार्थियों से दोहरवाएँ । कविता का गुट एवं एकल रूप में पाठ करवाएँ और प्रश्नोत्तर द्‌वारा समझाएँ । पूर्व परिचित अन्य कविता विद्‌यार्थियों से कहलवाएँ ।

● **सुनो और दोहराओ :**

JVK6TZ

३. विचित्र आदमी

एक आदमी कहीं जा रहा था । वह रास्ता भूल गया। उसने किसी दूसरे आदमी से रास्ता पूछा । दूसरे आदमी ने बताया, ''नदी किनारे जो पेड़ है, उसके ऊपर के रास्ते से चले जाओ ।'' आदमी विचित्र था । वह पेड़ के ऊपर चढ़ गया । उसके बोझ से पेड़ की डाल झुक गई । किसी तरह हाथों से डाल पकड़कर वह लटक गया ।

उसी समय एक अन्य आदमी घोड़े पर बैठा नदी पार कर रहा था । लटके हुए आदमी ने उसे पुकारा, ''कृपा करके आप मुझे बचा लीजिए, नहीं तो मैं नदी में गिर जाऊँगा ।'' घुड़सवार दयालु था । वह घोड़े को लेकर पेड़ के नीचे आया और अपने हाथों से उसके पैर पकड़ लिए लेकिन उसी क्षण घोड़ा आगे चल पड़ा । बेचारा घुड़सवार भी उसके पैर पकड़े हुए लटक गया ।

यह देखकर उस विचित्र आदमी ने घुड़सवार से कहा, ''इस प्रकार लटके-लटके तो हम दोनों नदी में गिर जाएँगे । यदि तुम गाना जानते हो तो कोई गीत गाना शुरू कर दो । शायद गाने की आवाज सुनकर कोई यहाँ आ जाए और हमें बचा ले ।'' घुड़सवार गाना जानता था । उसने गाना शुरू कर दिया । गीत बहुत अच्छा था । गाने पर ताली बजाने के लिए विचित्र आदमी ने अपने हाथों से पकड़ी डाल छोड़ दी । ताली तो क्या बजती, वे दोनों उसी समय नदी में गिर गए ।

– ***विष्णु प्रभाकर***

शब्दों की अंत्याक्षरी खेलो । जैसे –

तोता...ताली...लहर...रजनी...नदी...दीपा...पौधा...धान...नटखट...
टमाटर...राजा...जीवन...नाम...मछली...लड़की...कोयल...लोटा...टोकरी...

❑ चित्र दिखाकर विद्यार्थियों को यह बताने के लिए प्रोत्साहित करें कि कौन-सी घटनाएँ घटी होंगी । कहानी सुनाएँ और दोहरवाएँ । यह सुनिश्चित करें कि प्रत्येक विद्यार्थी ने कहानी को समझते हुए सुना है । उन्हें परिचित कहानी सुनाने के लिए प्रेरित करें ।

● अंतर बताओ :

४. कश्मीरा

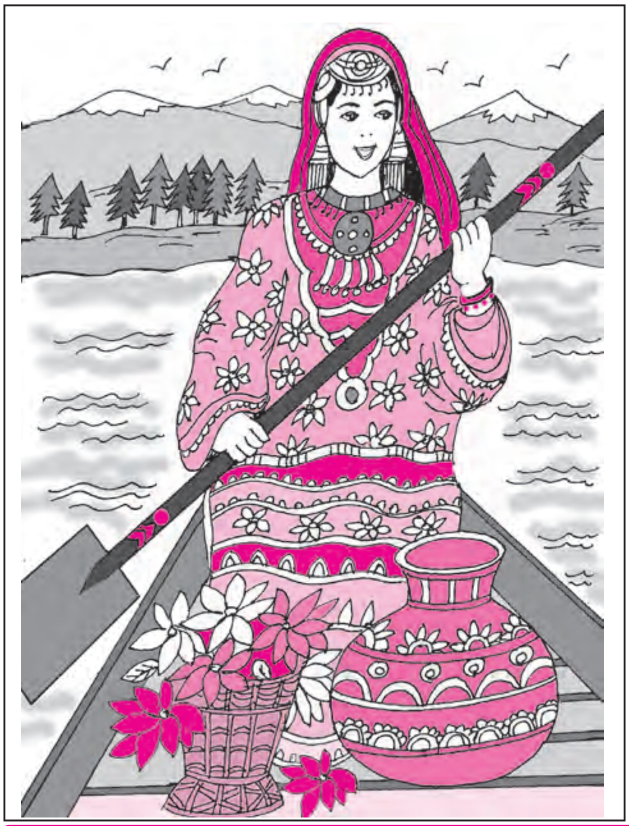

❑ विद्यार्थियों से दोनों चित्रों को ध्यान से देखकर इनमें दस अंतर बताने के लिए कहें । जम्मू-कश्मीर की बेटी के संबंध में जानकारी दें ।

पहचान हमारी

❑ **अध्यापन संकेत** : पहली इकाई, पाठ ५. पहचान हमारी-भाग (१) के **पृष्ठ ६ एवं ७** में वर्णमाला का आधा भाग अध्ययन-अनुभव के लिए है । शेष वर्णमाला पाठ ११. पहचान हमारी-भाग (२) के **पृष्ठ १३ एवं १४** पर दी गई है । अध्यापन संकेत समझकर विद्यार्थियों से अभ्यास करवाएँ । संपूर्ण पाठ्यसामग्री का मूल उद्‌देश्य वर्णमाला के वर्णों (स्वर, व्यंजन) तथा मात्रा और उनके चिह्नों की पहचान करवाना है । निरंतर अभ्यास द्‌वारा इनका दृढ़ीकरण करवाएँ । श्रवण-वाचन का बार-बार अभ्यास एवं स्वयं अध्ययन अपेक्षित है । गुट में प्रत्येक वर्ण की बारहखड़ी लिखवाएँ ।

(१) पृष्ठ ६, ७, १३, १४ पर ऊपर दाहिनी ओर स्वर दिए गए हैं । इनकी मात्राएँ बड़े चित्रों द्‌वारा पढ़ाना अपेक्षित है ।

(२) सर्वप्रथम इन पृष्ठों पर दिए गए चित्रों का निरीक्षण करने के लिए कहें ।

(३) बड़े चित्रों और मोटे अक्षरों के माध्यम से वर्णों का परिचय करवाएँ फिर मात्राओं को समझाएँ ।

(४) पुनरावर्तन के लिए ऊपर दिए गए प्रत्येक वर्ण का क्रम बदलकर छोटे चित्रों में शब्द दिए गए हैं । ये शब्द मात्रावाले भी हैं । विद्यार्थियों को केवल वर्ण पहचानने और रेखांकित करने के लिए कहें ।

(५) प्रत्येक पृष्ठ के नए वर्णों का परिचय करवाएँ तथा उस पृष्ठ पर आए हुए स्वर और मात्राओं को श्यामपट्ट पर लिखें, लिखवाएँ और आकलन कराएँ । 'पढ़ो' के लिए दिए गए शब्दों का सुलेखन और श्रुतलेखन करवाएँ ।

(६) प्रत्येक पृष्ठ पर नीचे दिए गए शब्द, मात्राओं को पहचानने और दिए गए वर्णों के साथ उन्हें जोड़कर पढ़ने के लिए हैं । पहली पंक्ति बिना मात्रावाली, दूसरी पंक्ति पूर्व पृष्ठ की मात्रावाली (पृ. ६ छोड़कर) तथा तीसरी पंक्ति में उसी पृष्ठ की मात्राएँ लगाकर फिर दोनों मात्राएँ साथ लगाकर कई शब्द दिए गए हैं । इन शब्दों को श्यामपट्ट पर लिखकर स्वयं पढ़ें और विद्यार्थियों से अनुवाचन करवाएँ । तत्पश्चात प्रत्येक विद्यार्थी से मुखर और मौन वाचन करवाएँ । **इन शब्दों के अर्थ बताना अपेक्षित नहीं है ।**

● देखो और सुनो :

५. पहचान हमारी-भाग (१)

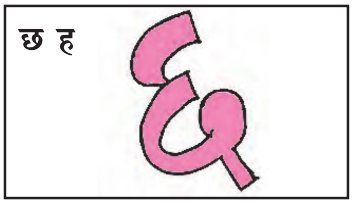

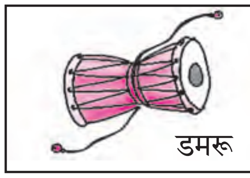

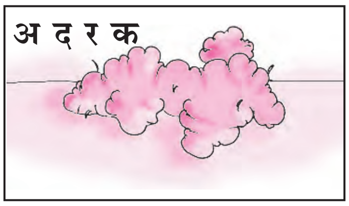

K4JXN5

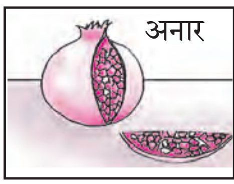

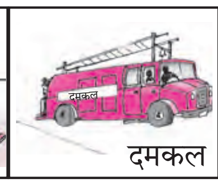

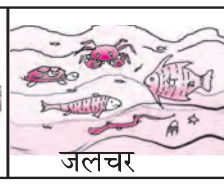

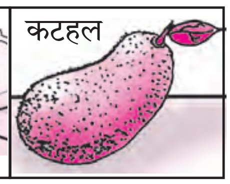

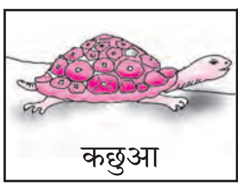

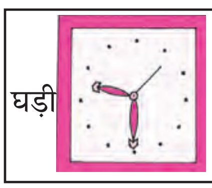

पढ़ो : डर, फर, घर, रथ, शक, शरद, शहद, दशक, आदर, कहकर, अरहर, अशरफ, अटककर, आह, डाक, छाछ, थका, कथा, हरा, आशा, आका, काका, दादा, आहार, शारदा, शाकाहार, फटकार ।

❑ इस पृष्ठ का अध्ययन-अध्यापन करने से पहले पृष्ठ क्रमांक ५ पर दिए गए अध्यापन संकेत पढ़ें ।

● **देखो और सुनो :**

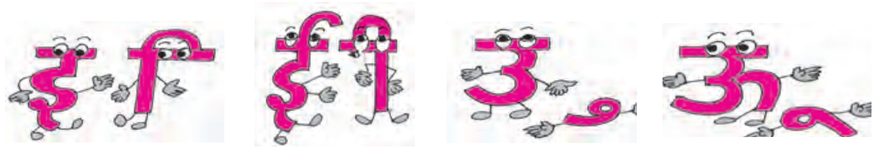

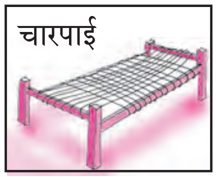

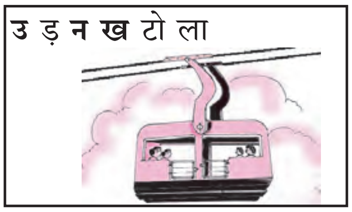

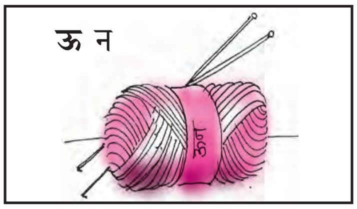

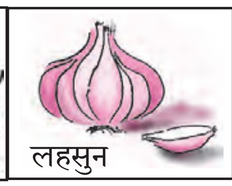

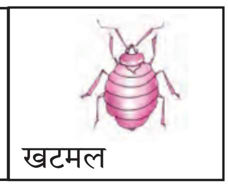

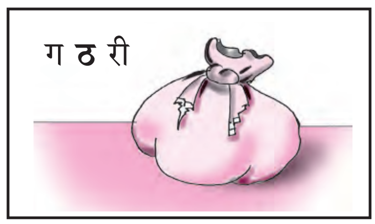

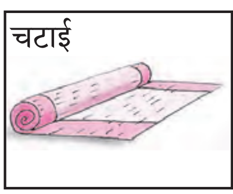

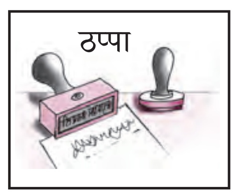

पढ़ो : यह, नख, उर, आम, गठन, शपथ, ऊपर, चमचम, हमदम, चकमक, चटपट, फड़ककर, आई, माई, इरा, रमा, ढाका, मामा, नाना, चाचा, आकाश, कपड़ा, दादरा, अचार, इकहरा, चारपाई, दीदी, चूरा, कुहू, चिड़िया, शिकारी, दीपिका, जामुन, नूपुर, दुरूह, कुरूप, गुटरू, शारीरिक, पिचकारी ।

❑ इस पृष्ठ का अध्ययन-अध्यापन करने से पहले पृष्ठ क्रमांक ५ पर दिए गए अध्यापन संकेत पढ़ें ।

● **देखो और बनाओ :**

६. बधाई कार्ड

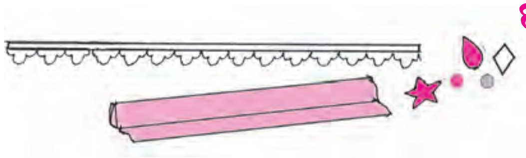

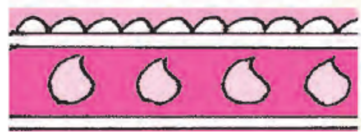

सामग्री – कार्डशीट, पुरानी साड़ी की लेस, टिकलियाँ, सजावटी काँच के टुकड़े, कैंची, गोंद ।

संदेश

पूज्य नानी जी,

सादर प्रणाम ।

जन्मदिन की बधाई !

आपका/आपकी,
प्रिय नाती/नातिन

हर्षल/प्रज्ञा

विधि : कार्डशीट का ८"× ६" का टुकड़ा लेकर उसे बीच से मोड़ो । ऊपरवाले हिस्से पर साड़ी की लेस, टिकलियाँ और सजावटी काँच के टुकड़े चिपकाओ । दिया गया संदेश भीतरी पृष्ठ पर उचित प्रारूप में लिखो । उपलब्ध सामग्री से अन्य प्रकार के कार्ड बनाओ ।

❑ विद्‍यार्थियों को इसी प्रकार से उनके मित्र/ सहेली के जन्मदिन पर अपने हाथों से बनाया बधाई कार्ड भेजने के लिए प्रेरित करें । बोलने और लिखने में बड़ों के लिए सादर प्रणाम, नमस्कार, नमस्ते और छोटों के लिए स्नेह, प्यार जैसे शब्दों का प्रयोग कराएँ ।

● **देखो और समझो :**

७. करो और जानो

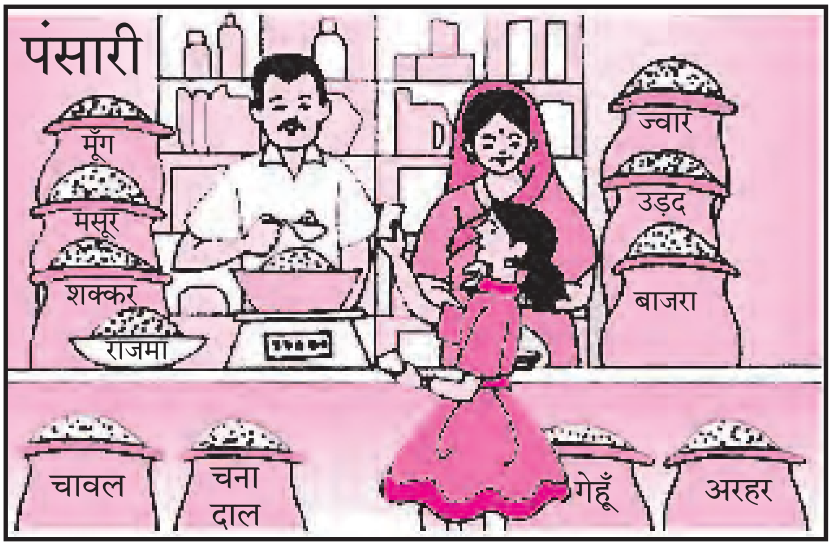

रोटी बेलो ।

गाओ ।

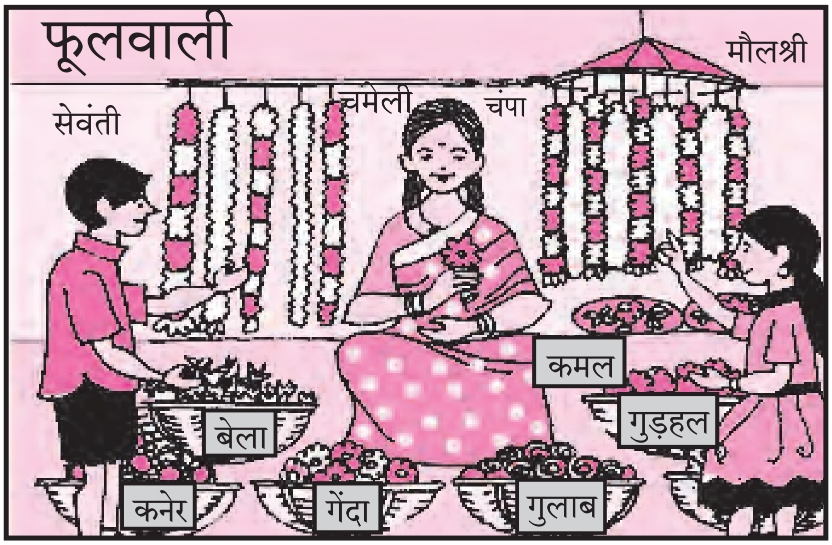

हँसो ।

❑ विद्यार्थियों से गुट में एवं एकल रूप में दी गई कृतियों का अभिनय करने के लिए कहें । चित्रों की पहचान करवाकर विभिन्न अनाज, फूलों, फलों के नाम पूछें । किसान, डाकिया, सैनिक, नर्स आदि के कार्यों पर चर्चा करके विद्यार्थियों से इनका अभिनय करवाएँ ।

● सुनो और गाओ :

८. माँ

प्रकृति का प्रारूप हो तुम ।
माँ! जगत का रूप हो तुम ।।

ममता का सागर हो तुम ।
समता की गागर हो तुम ।
सरल, सहज, सुरूप हो तुम ।
माँ! जगत का रूप हो तुम ।।

संस्कारों की ज्योति जलाती ।
जीवन का आधार सजाती ।
ऐसी अजब, अनूप हो तुम ।
माँ! जगत का रूप हो तुम ।।

माँ! ब्रह्मांड स्वरूप हो तुम ।
माँ! जगत का रूप हो तुम ।।

– रमेश यादव

१. कोष्ठक के उचित वर्ण से रिक्त स्थान भरो : (ग, सु, आ, रों, सं, ऐ, ति, रू, नू, जी, धा)

—सी, ज—त, ज्यो—, ——प, —वन, —स्का—, ——र, अ—प ।

२. उत्तर लिखो :

(क) जगत का रूप कौन है ?

(ख) माँ किसकी ज्योति जलाती है ?

❑ विद्‌यार्थियों को साभिनय गीत सुनाएँ और उनसे दोहरवाएँ । सामूहिक अभिनय के साथ गाने के लिए कहें । कविता की लयात्मकता की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए उचित लय में गीत गवाएँ । विद्‌यार्थियों से कविता के आधार पर ऊपर के अधूरे शब्दों की पूर्ति करवाएँ ।

● सुनो, दोहराओ और बताओ :

९. मोती जैसे दाँत

अथर्व के जन्मदिन का निमंत्रण पाकर बैंगनी परी अपने देश से आई थी । परी ने अथर्व को 'जियो हजारों साल' कहा और उसे परी देश के बैंगनी रंग के खूब सारे चॉकलेट दिए । "धन्यवाद परी !" अथर्व ने कहा । परी मुस्कुराकर बोली, "मैं जानती हूँ, सारे बच्चों की पसंद चॉकलेट है । हमारे यहाँ तो चॉकलेटों की खेती और शीत पेय के झरने हैं ।"

अथर्व ने परी से पूछा, "बैंगनी परी ! क्या आप मुझे अपने साथ परी देश दिखाने ले चलेंगी ?" "अरे ! क्यों नहीं, जरूर ले चलूँगी, " परी ने कहा । बैंगनी परी अथर्व को लेकर परी देश के लिए उड़ चली । परी देश देखकर अथर्व बहुत खुश हुआ ।

उसने देखा कि परी देश के बच्चे झरने के पास जाकर शीत पेय पीते हैं और खेतों से चॉकलेट तोड़कर खाते हैं । यह देखकर अथर्व खुशी के मारे खिल-खिलाकर हँस पड़ा । वह कुछ बच्चों के पास गया और उनसे हाथ मिलाकर बोला, "दोस्तो ! मैं अथर्व हूँ । पृथ्वी लोक से बैंगनी परी के साथ आया हूँ ।" 'स्वागत है मित्र' कहकर वे बच्चे भी हँसे पर वे अथर्व के दूध-से सफेद, मोती-से चमकीले दाँत देखकर हैरान रह गए। अथर्व उन बच्चों के काले-पीले, टूटे-फूटे दाँत देखकर चकित था ।

अचानक उसे डॉक्टर चाचा की बात याद आ गई । उन्होंने कहा था, "अथर्व बेटा ! शीत पेय मत पीना । चॉकलेट, चुईंगम मत खाना । नहीं तो तुम्हारे दाँत खराब हो जाएँगे ।"

अथर्व बुदबुदाया, 'इसी कारण इस देश के बच्चों के दाँत खराब हैं । यह तो बुरी बात है ।' तभी उसे लगा; कोई उसे झँझोड़कर जगा रहा है । आँखें खोलीं तो देखा, माँ उसे जगा रही थीं और कह रही थीं, "उठो बेटा अथर्व ! आज विद्यालय नहीं जाना है क्या ?" अथर्व माँ के मोती जैसे चमकते दाँत देख रहा था ।

– *डॉ. मालती शर्मा*

उत्तर दो :

१. जन्मदिन किसका था ?
२. बैंगनी परी ने अथर्व को क्या दिया ?
३. परी देश के बच्चों के दाँत कैसे थे ?
४. डॉक्टर चाचा ने क्या कहा था ?

❑ विद्यार्थियों को कहानी सुनाएँ और क्रमशः दो-दो पंक्तियाँ दोहरवाएँ । प्रश्न पूछें और उनसे उत्तर प्राप्त करें । शीत पेय, चॉकलेट, फास्टफूड आदि खाने से होने वाली हानि पर चर्चा करवाएँ । विद्यार्थियों को शरीर के अंगों की स्वच्छता के लिए प्रेरित करें ।

● **सुनो, समझो और बोलो :**

१०. मित्रता

(खेल के मैदान में बातचीत करते हुए बच्चे ।)

अर्नाल्ड : नमस्ते ! मेरा नाम अर्नाल्ड है । मैं छतरी तालाब के सामने रहता हूँ ।

तबस्सुम : मित्रो ! मेरा नाम तबस्सुम है । मैं पाठशाला के समीप रहती हूँ ।

क्षमा : सुनो ! मैं क्षमा हूँ । बाजार के पास रहती हूँ ।

विहंग : नमस्ते ! मैं विहंग, बस स्टैंड के पीछे रहता हूँ ।

अर्नाल्ड : मेरे घर में दादा जी, माता जी, पिता जी और छोटी बहन हैं ।

K5VCHD

तबस्सुम : मेरे घर में माता जी, पिता जी और बुआ जी रहती हैं । बुआ जी हमें ज्ञान-विज्ञान की रोचक कहानियाँ सुनाती हैं ।

विहंग : मेरे पिता जी वकील हैं । वे न्यायालय के किस्से सुनाते हैं ।

अर्नाल्ड : मेरी माता जी सरकारी अस्पताल में नर्स हैं । तुम्हारी माता जी क्या करती हैं ?

क्षमा : मेरी माता जी सरपंच हैं । कल मेरी बहन का जन्मदिन है, तुम सब जरूर आना ।

तबस्सुम : हाँ-हाँ, जरूर । मैं तुम्हारी मदद के लिए आती हूँ ।

विहंग : आज से हम सब अच्छे मित्र हैं ।

संवाद सुनकर उचित जोड़ियाँ मिलाओ :

१. छतरी तालाब के सामने रहता हूँ । - तबस्सुम

२. रोचक कहानियाँ सुनाती हैं । - अर्नाल्ड

३. मेरे पिता जी वकील हैं । - क्षमा

४. मेरी माता जी सरपंच हैं । - विहंग

❑ विद्‌यार्थियों को सही उच्चारण के साथ संवाद सुनाएँ । उनको एक-दूसरे से प्रश्न पूछने और उत्तर देने के लिए कहें । उन्हें इसी प्रकार अपने पड़ोसी का परिचय देने के लिए प्रोत्साहित करें इससे उनकी संभाषण क्षमता बढ़ेगी । अपने से बड़ों के लिए आदरसूचक शब्दों (आप, जी, हैं) का प्रयोग समझाएँ और अभ्यास करवाएँ । संभाषण और लेखन में आदरसूचक शब्दों के उचित प्रयोग पर ध्यान दें ।

● देखो और सुनो :

११. पहचान हमारी – भाग (२)

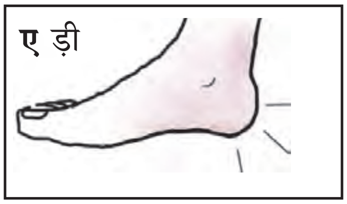

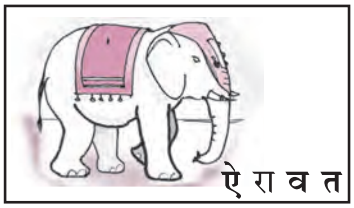

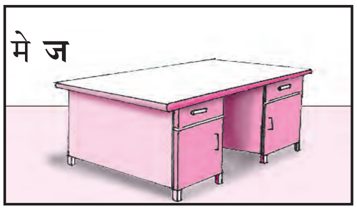

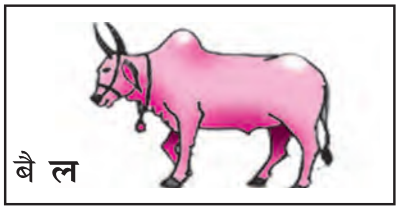

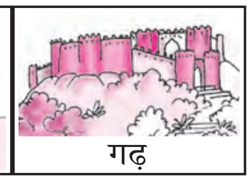

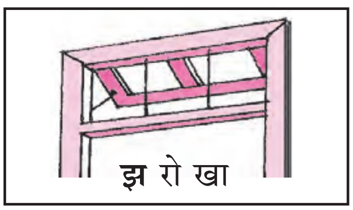

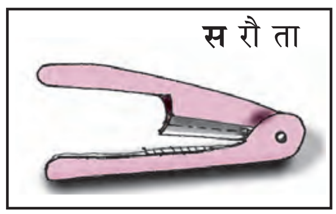

K65BY1

पढ़ो : जल, एक, गढ़, वह, ओर, और, कमल, करतल, अनपढ़, जगमग, अचरज, आजकल, ऐसा, काला, पीला, झाड़ी, लीची, चातक, अज्ञात, एकता, पपीता, सुदूर, शहतूत, अनुसूची, कुतूहल, मेवे, जैतून, थैले, टोपी, दौड़ो, तौलो, कचौड़ी, कैकेयी, वैदेही, शैलेश, कैनेडी, चौकोर, नौरोजी, चौकोन ।

❑ इस पृष्ठ का अध्ययन-अध्यापन करने से पहले पृष्ठ क्रमांक ५ पर दिए गए अध्यापन संकेत पढ़ें ।

● **देखो और सुनो :**

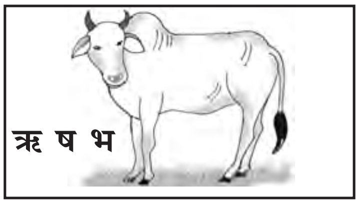
ऋ ष भ

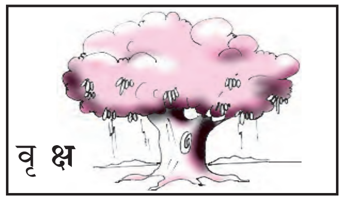
वृ क्ष

ऋण

षटकोण

भवन

क्षमा

अं ब र

अँ गू ठी

ऑ टो

अं त रि क्ष

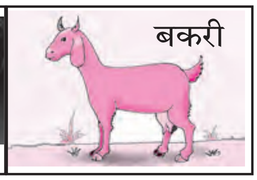
बकरी

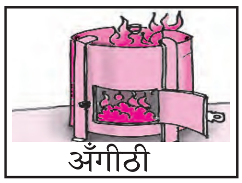
अँगीठी

ऑक्टोपस

श्र व ण यं त्र

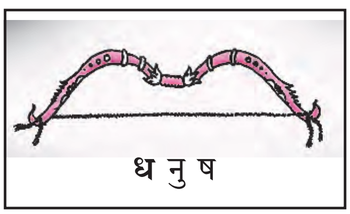
ध नु ष

अः

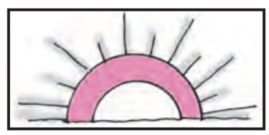
प्रातः

श्रवणकुमार

संगणक

समाचारपत्र

धनादेश

ङ

ञ ळ

पढ़ो : तब, क्षण, अंग, श्रम, धन, मठ, सत्र, ऑन, ऑफ, आँख, अतः, नमः, नयन, ऋषभ, बॉल, हॉल, बौनों, बाजरा, तालाब, बिहारी, बेचैन, त्रिवेणी, अमृत, चूड़ियाँ, अनुकूल, वाङ्मय, षटकार, बंटी, कंघा, अंडा, पंप, पंख, कंठ, पंछी, अंजीर, अंकिता, अचंभा, अंगूर, बंधन, गुंफन, झंझावात, पंढरपुर ।

❑ इस पृष्ठ का अध्ययन-अध्यापन करने से पहले पृष्ठ क्रमांक ५ पर दिए गए अध्यापन संकेत पढ़ें ।

● **कृति करो :**

१२. व्यायाम

K6E4ZN

विश्राम की मुद्रा में खड़े रहो ।

सावधान की मुद्रा में खड़े रहो ।

एक पैर पर खड़े हो जाओ ।

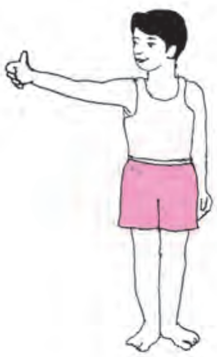

दायाँ हाथ दाईं ओर ले जाते हुए अँगूठे का नाखून देखो ।

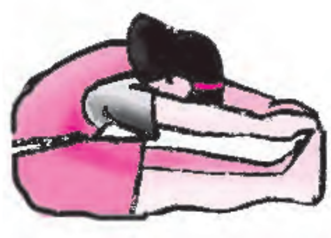

बैठकर पैर सीधे करो । दोनों हाथों से पैरों की उँगलियों को पकड़ो ।

घुटनों पर बैठकर दोनों हाथों से पैरों की उँगलियाँ पकड़ो ।

अपने दोनों पैरों के अँगूठे छुओ ।

झुककर दाहिना हाथ बाएँ पैर के अँगूठे पर रखो और बायाँ हाथ ऊपर करो ।

दोनों हाथ ऊपर करके पैर के पंजों पर खड़े हो जाओ ।

❑ विद्यार्थियों से उपरोक्त कृतियाँ सामूहिक, गुट एवं एकल रूप में करवाएँ । नियमित व्यायाम की आवश्यकता पर चर्चा करवाएँ ।

● देखो और अपनी मातृभाषा में बताओ :

१३. बोलो और जानो

कुत्ता

गुब्बारा

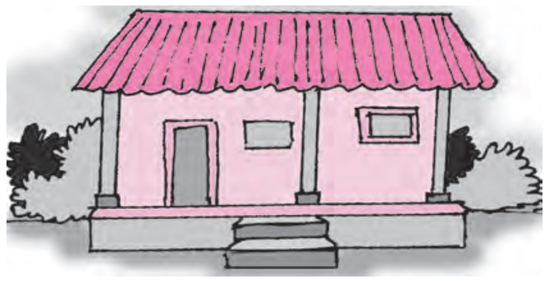
घर

बस्ता

बेला

अमरूद

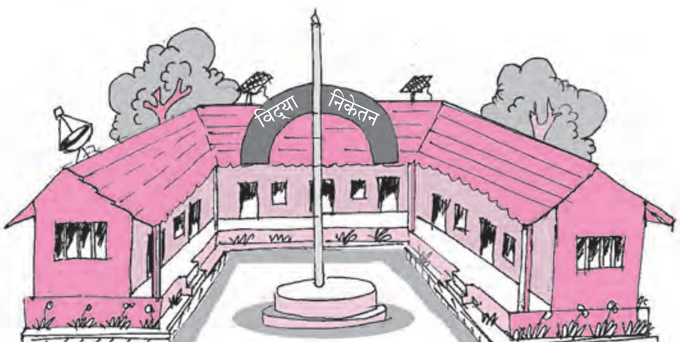

विद्यालय

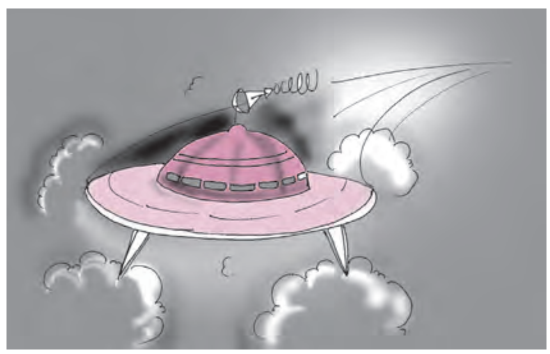
उड़नतश्तरी

गुड़िया

यह पुस्तक है ।

वह अलमारी है ।

❑ ऊपर दिए गए चित्रों और उनके हिंदी शब्दों का वाचन करवाएँ । विद्यार्थियों से उनकी मातृभाषा में वस्तुओं के नाम कहलवाएँ । इसी प्रकार मातृभाषा के शब्दों और वाक्यों का हिंदी में और हिंदी के अन्य शब्दों तथा वाक्यों का विद्यार्थियों की मातृभाषा में अनुवाद करवाएँ । निकट/दूर दर्शाने के लिए 'यह' और 'वह' शब्दों का प्रयोग विद्यार्थियों को समझाएँ और बार-बार अभ्यास करवाएँ ।

* पुनरावर्तन –१ *

१. सुनो और दोहराओ :

बन–वन, पर–फर, उन–ऊन, आधा–सादा, कार–खार, सात–साथ, गृह–ग्रह, वाणी–पानी, मेघा–मेधा, ऋचा–कृपा, शेर–सेर, चरण–चारण, कपड़ा–डबरा, लोरी–लॉरी, शाप–साँप, उधार–उघाड़, सरपट–सरपत ।

२. तुम अपने पड़ोस के बच्चों के साथ कैसा व्यवहार करते हो, बताओ ।

३. अनुरेखन करो और पढ़ो :

धागा, कमल, खिलाड़ी, पूर्णिमा, स्पर्धा, नूपुर, हृदय, गिरगिट, बाबा

४. दिए गए प्राणियों और उनके घर की उचित जोड़ी मिलाओ :

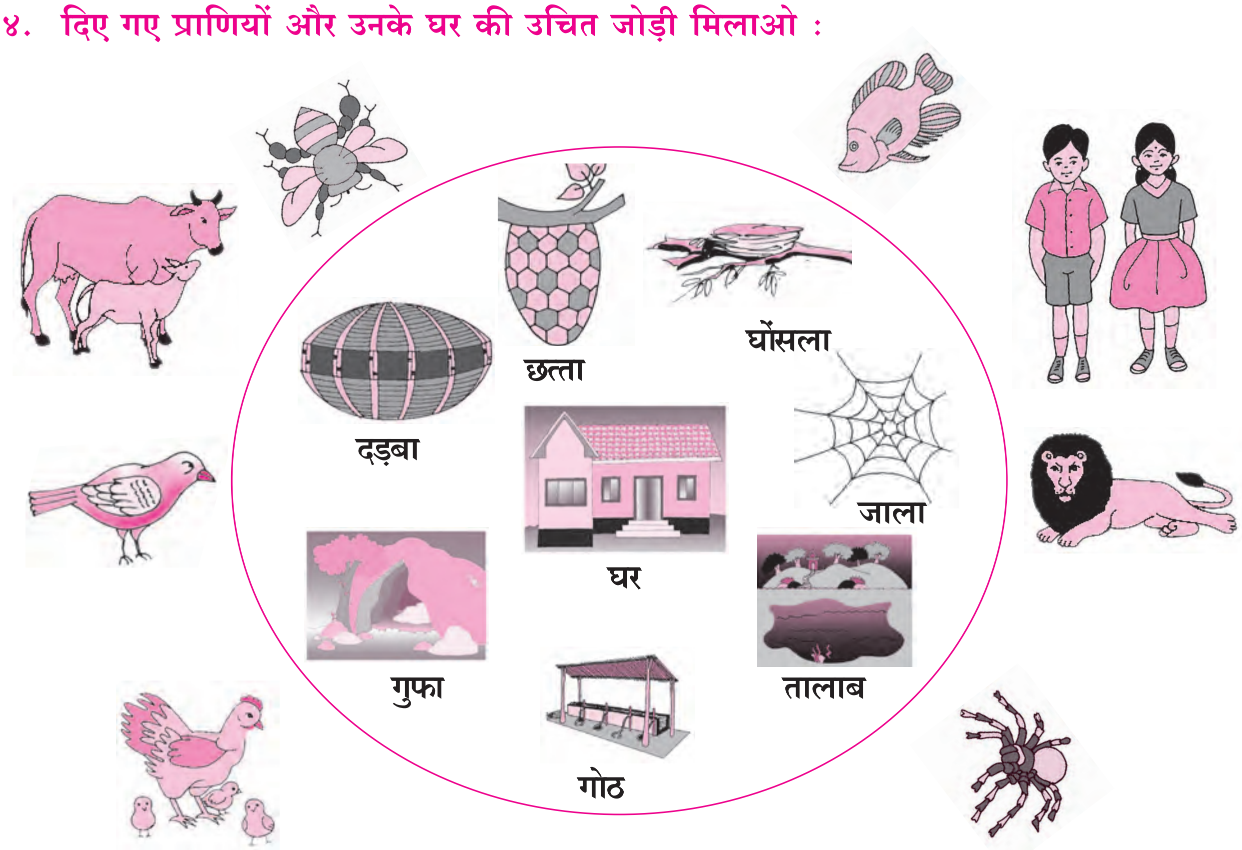

५. तुम्हारे बनाए हुए रेत के घरौंदे को किसी ने तोड़ दिया तो तुम क्या करोगे ?

कृति/उपक्रम

किसी कार्यक्रम में पहेलियाँ/ चुटकुले सुनाओ ।	अपना और अपने परिवार का परिचय दो ।	परिसर में लगी तख्तियों से मात्रावाले शब्द पढ़ो ।	समाचारपत्र में छपे बिना मात्रावाले वर्णों के नीचे रेखा खींचो ।

* पुनरावर्तन -२ *

१. **सुनो और दोहराओ :**

बैल-बेल, ढाल-गढ़, ओज-भोज, रंग-रग, तमिळ-कमल, साड़ी-कढ़ी, छत-छत्र, विज्ञान-विज्ञापन, रिपु-ऋतु, गौरी-कसौटी, झाँझ-साँझ, चाभी-दीया, हाल-हॉल, साल-शॉल, तृण-हृदय, पेड़-डमरू ।

२. **परीक्षा के समय अचानक तुम्हारा पेन खराब हो जाए तो तुम क्या करोगे ?**

३. **अनुरेखन करो और पढ़ो :**

श्रम, शहद, गृह, नीरोग, अतः, बॉल, पैसे, मीठी, मूँछ, पैतृक

४. **ध्यान से देखो और पत्तों के आधार पर पौधों/वृक्षों के नाम हिंदी और मराठी में लिखो :**

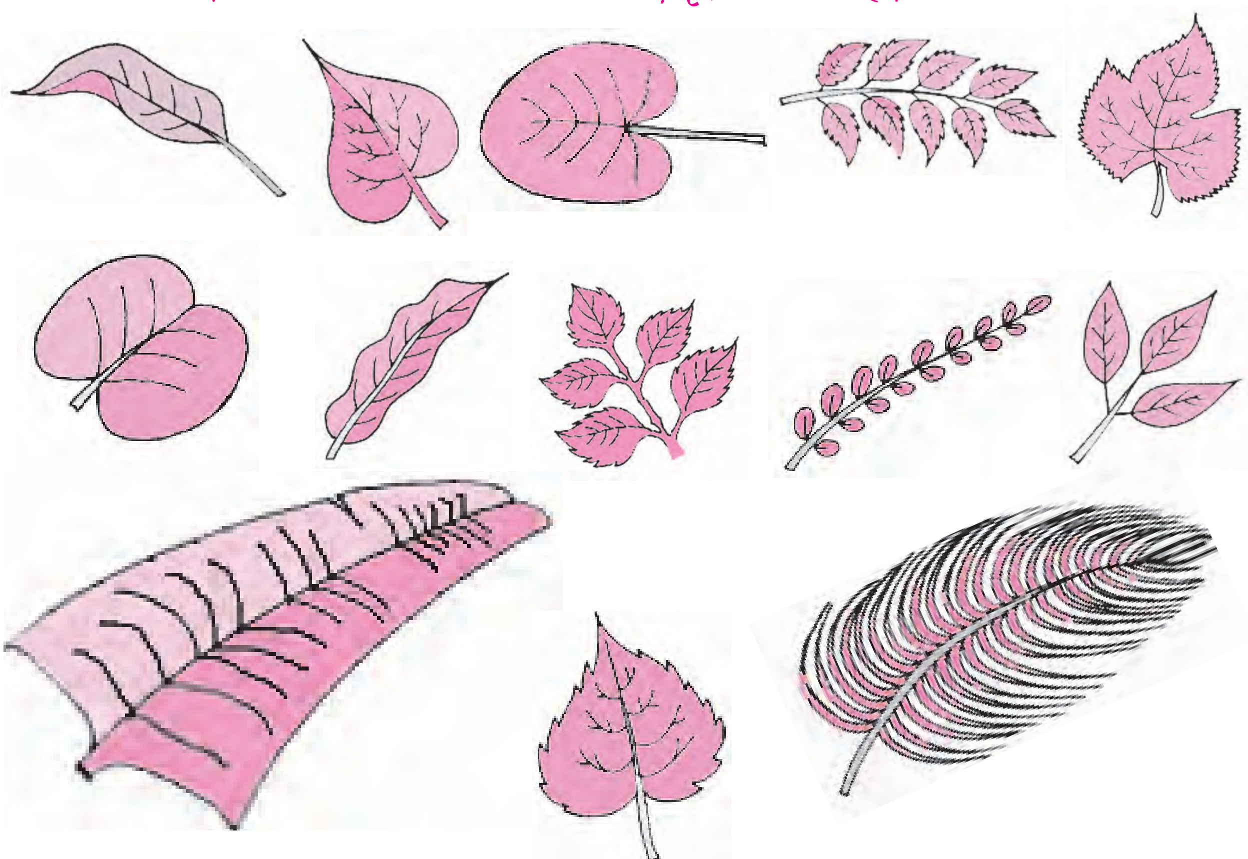

५. **पुस्तक मेले में जाकर पुस्तकों का निरीक्षण करो और उनपर चर्चा करो ।**

कृति/उपक्रम

रेडियो/दूरदर्शन पर सुने हुए विज्ञापन सुनाओ ।	यदि तुम्हें पंख लग जाएँ तो तुम क्या-क्या करोगे, बताओ ।	अपनी पसंद के चित्र लेकर चित्रवाचन करो ।	समाचारपत्र एवं दिनदर्शिका के मात्रावाले शब्द लिखो ।

दूसरी इकाई

● देखो, समझो और बताओ :

१. गाँव और शहर

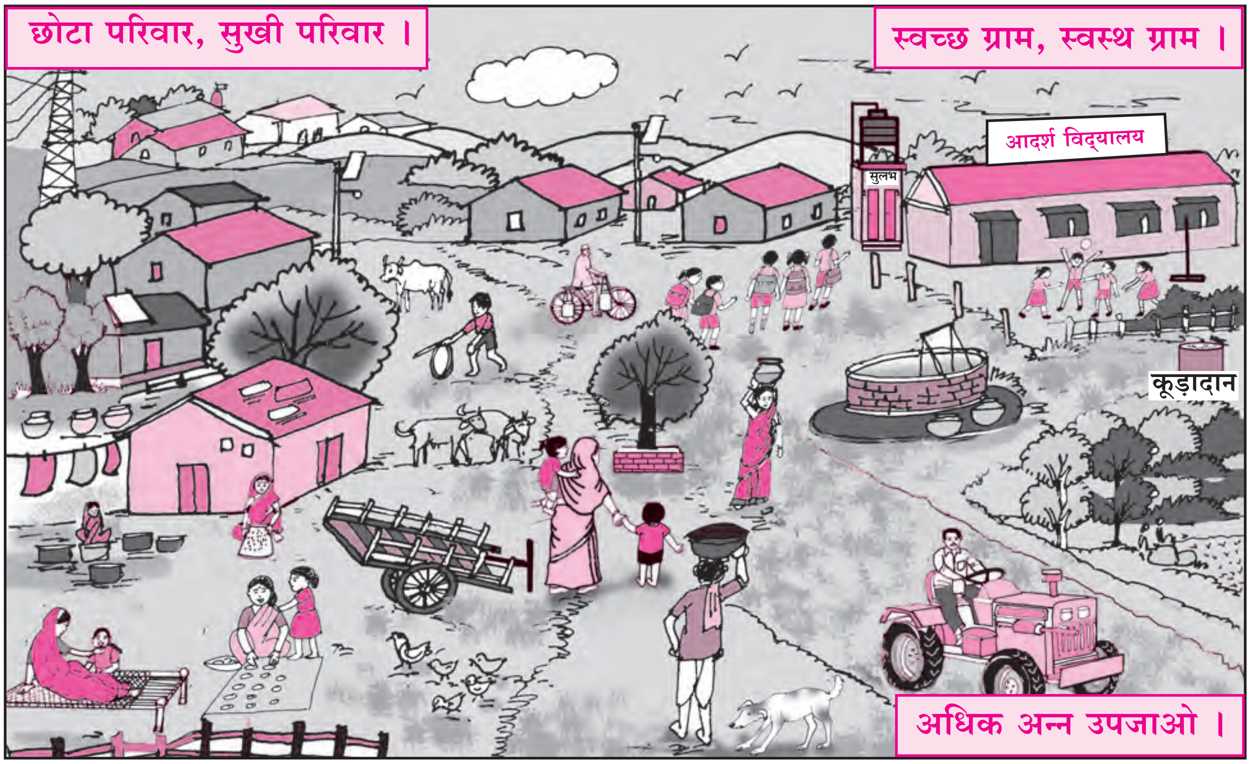

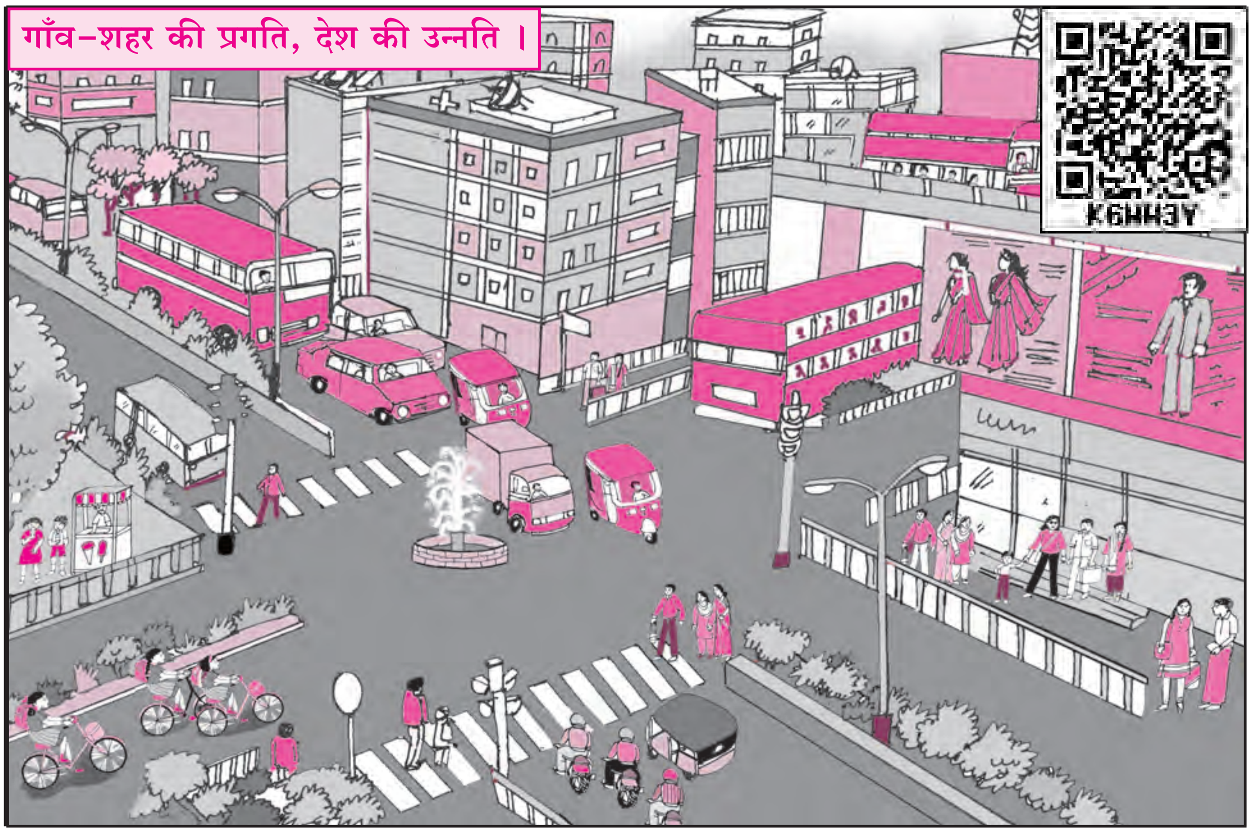

❑ गाँव और शहर के चित्रों के शब्द एवं वाक्य बोलने के लिए प्रेरित करें । प्रश्नोत्तर द्वारा दोनों की जानकारी दें । प्रश्न पूछकर सुनिश्चित करें कि उन्होंने विषय को समझा है । विद्यार्थियों के गुट बनाकर उनसे गाँव और शहर की विशेषताएँ कहलवाएँ ।

● पढ़ो और गाओ :

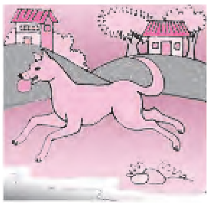

२. लालची कुत्ता

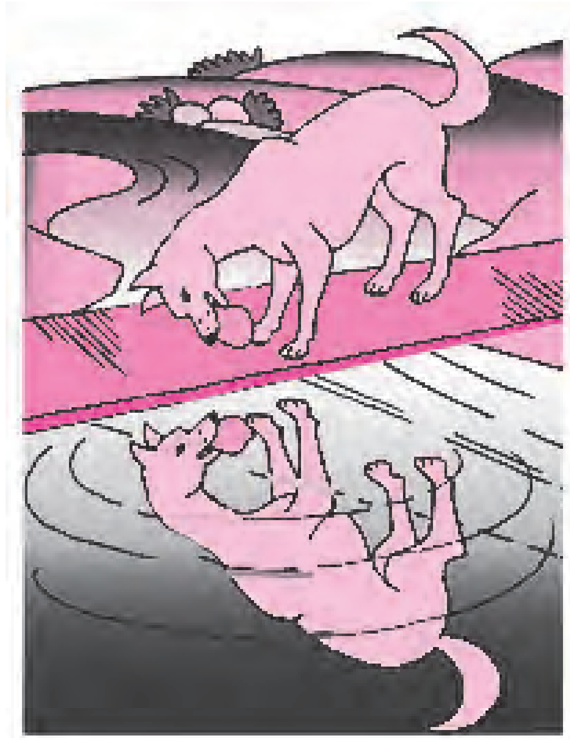

एक कुत्ता जो बहुत लालची,
भाग चला लेकर रोटी,
पड़ी रास्ते में उसके इक,
नदी बहुत जो थी छोटी ।
जाने को उस पार नदी के,
रखा था पतला पटरा,
सँभल-सँभलकर चलना पड़ता,
वरना था पूरा खतरा ।
पानी में देखा इक कुत्ता,
उसके जैसा था जो दीखता,

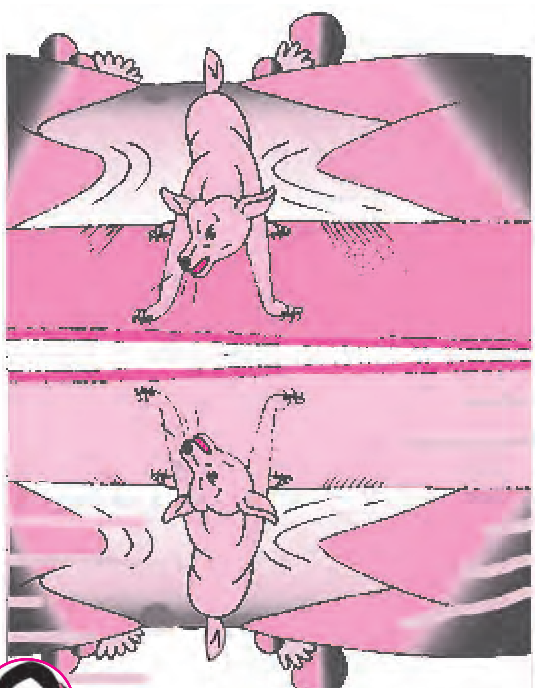

उसके जैसी मुँह में रोटी,
दीख रही थी मोटी-मोटी ।
कैसे रोटी उसकी पाऊँ,
उसका हिस्सा भी हथियाऊँ ?
भौंका सोच बेभानी में,
रोटी जा गिरी पानी में ।
भौंचक्का-सा लगा देखने;
खड़ा रहा मुँहबाय,
बच्चो ! इसको कभी न भूलो;
लालच बुरी बलाय ।

-प्रभाकर भट्ट

K7655L

पढ़ो और विरामचिह्नों को समझो :

पूर्णविराम (।),अल्पविराम (,), प्रश्नवाचक (?), विस्मयादिबोधक (!), अर्धविराम (;)

१. नदी बहुत जो थी छोटी ।
२. उसका हिस्सा भी हथियाऊँ ?
३. भौंचक्का-सा लगा देखने; खड़ा रहा मुँहबाय,
४. बच्चो ! इसको कभी न भूलो; लालच बुरी बलाय ।

❑ उचित उच्चारण, आरोह-अवरोह एवं लय-ताल के साथ कविता का मुखर वाचन करें । विद्यार्थियों को ध्यान से सुनने के लिए कहें । सामूहिक, गुट एवं एकल रूप में अनुवाचन कराएँ । उनसे लालच जगाने वाली वस्तुओं के नाम कहलवाएँ । अन्य गीत गवाएँ ।

● **पढ़ो और दोहराओ :**

३. खिचड़ी

एक बार बादशाह अकबर ने घोषणा की – 'जो कोई ठंड में रात भर महल के निकट तालाब के पानी में खड़ा रहेगा, उसे इनाम दिया जाएगा ।' घोषणा सुनकर बहादुर नाम के एक

आदमी ने ठंड में रात भर तालाब में खड़े रहने का कारनामा कर दिखाया । बादशाह ने जानना चाहा कि इतनी ठंड में वह पानी में कैसे खड़ा रहा ? बहादुर ने आदर से कहा, ''बादशाह सलामत ! मैं रात भर आपके महल के सामने जलते दीपक देखता रहा ।'' बादशाह को लगा कि महल के जलते दीपों से उसे गरमी मिली है । अतः उन्होंने उस आदमी को इनाम नहीं दिया । दूसरे दिन दरबार में बीरबल के न दीखने पर बादशाह ने एक सेवक को उनके घर भेजा । सेवक ने आकर बताया, ''जहाँपनाह ! बीरबल खिचड़ी पका रहे हैं ।'' दूसरे दिन भी बादशाह को वही जवाब मिला । तब बादशाह स्वयं बीरबल के घर पहुँचे ।

बीरबल ने बाँस गाड़कर आँच से काफी ऊँचाई पर हँड़िया टाँगकर उसमें खिचड़ी पकाने के लिए रखी थी । बादशाह अकबर ने पूछा, ''बीरबल, खिचड़ी की हँड़िया इतनी ऊपर लटकाई है, वहाँ तक आँच कैसे पहुँचेगी ? '' बीरबल ने कहा, ''जब महल के सामनेवाले दीपों की गरमी बहादुर को मिल सकती है तो इस आँच पर मेरी खिचड़ी भी पक सकती है ।'' बादशाह सब समझ गए । वे मुस्कुरा उठे । दूसरे दिन उन्होंने बहादुर को बुलाकर इनाम दिया । इस तरह बीरबल ने बहादुर के साथ हुए अन्याय को दूर करवाया ।

किसने-किससे कहा, बताओ :

१. ''मैं रात भर आपके महल के सामने जलते दीपक देखता रहा ।''
२. ''बीरबल खिचड़ी पका रहे हैं ।''
३. ''वहाँ तक आँच कैसे पहुँचेगी ?''
४. ''दीपों की गरमी बहादुर को मिल सकती है तो इस आँच पर मेरी खिचड़ी भी पक सकती है ।''

K7FN79

❑ कहानी तीन-चार बार पढ़वाएँ । विद्यार्थियों से मौन वाचन करने के लिए कहें । प्रश्नोत्तर के माध्यम से पाठ के आशय पर चर्चा करें । बीरबल की मानवता, न्यायबुद्धि और चतुराई की सीख समझाएँ तथा व्यवहार में इनका उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करें । वाक्यों में आए 'के', 'में', 'की', 'को' और 'से' आदि कारक चिह्नों पर चर्चा करके वाक्यों में उनका प्रयोग करवाएँ ।

● अनुरेखन करो :

४. रोबोट

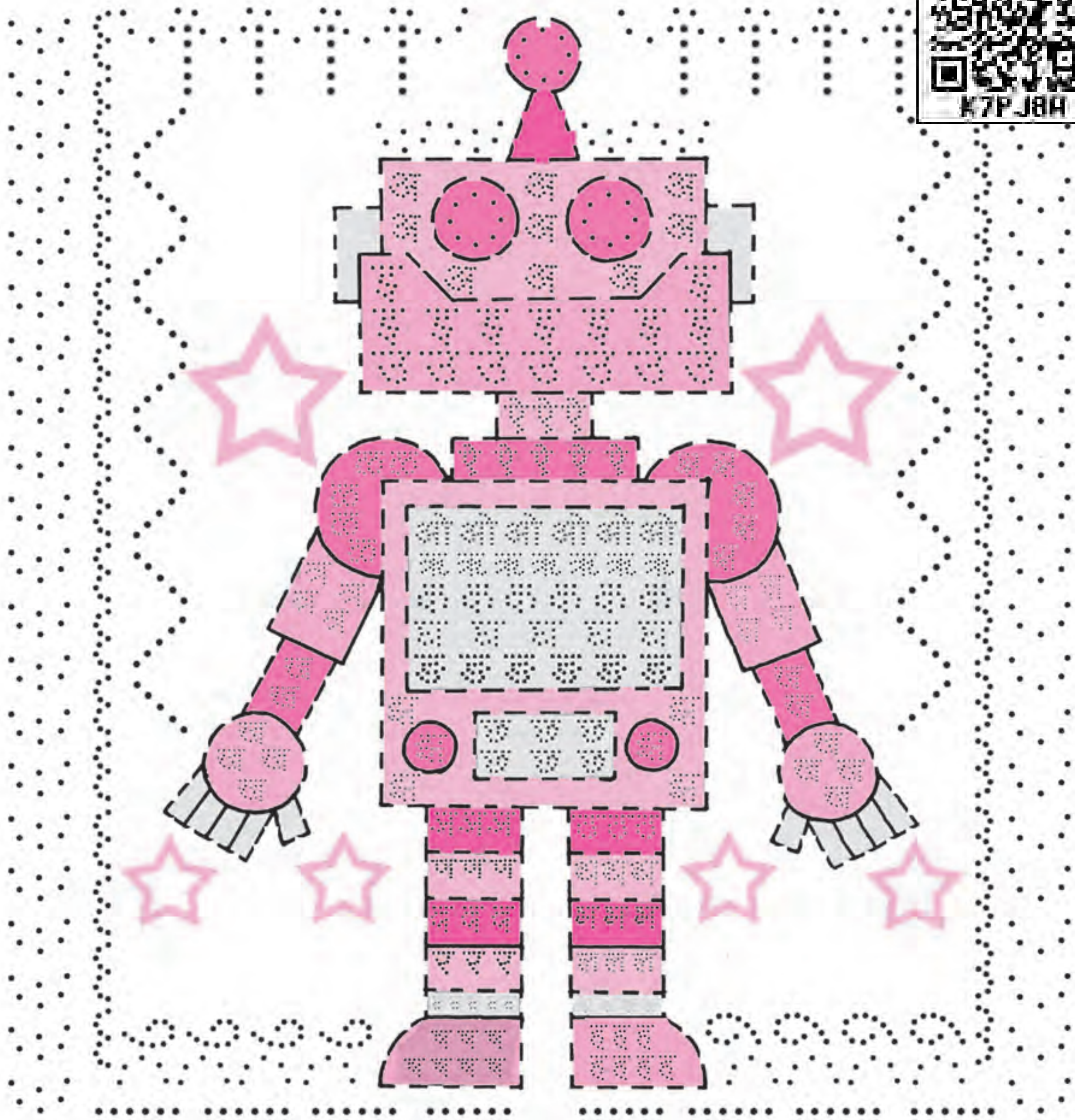

❑ रोबोट में वर्ण अवयव एवं वर्ण दिए गए हैं । उनका अनुरेखन करवाएँ । इसी प्रकार सभी वर्णों का लेखन करने के लिए प्रेरित करें ।

जुड़ें हम

❑ **अध्यापन संकेत : पृष्ठ २३ और २४** पर दी गई संपूर्ण पाठ्यसामग्री का उद्देश्य संयुक्ताक्षरों की पहचान करवाकर वाचन और लेखन कराना है । वर्णों को संयुक्त बनाने के लिए रूप के आधार पर इन्हें तीन भागों तथा 'र' को तीन प्रकारों (र्, ्र, ़) में बाँटा गया है । इन्हें अलग-अलग दिया गया है । शिरोरेखा के नीचे र पूरा होता है ।

(१) सर्वप्रथम पाठ में आए चित्र के शब्द सुनाकर दोहरवाएँ । मोटे अक्षर के संयुक्ताक्षर को श्यामपट्ट पर लिखकर समझाएँ । सभी संयुक्ताक्षर की पहचान होने तक अभ्यास करवाएँ ।

(२) पाठ्यांश पढ़वाकर संयुक्ताक्षर को रेखांकित करने के लिए कहें । तत्पश्चात विद्यार्थियों से संपूर्ण पाठ्यांश का अनुलेखन करने के लिए कहें । देखें कि विद्यार्थी विरामचिह्नों सहित शुद्ध लेखन करते हैं । विरामचिह्नों – पूर्णविराम, प्रश्नचिह्न, अल्पविराम, विस्मयादिबोधक और अर्धविराम को समझाकर इनके उचित प्रयोग पर बल दें ।

(३) चित्र दिखाकर और दिए गए शब्दों का प्रयोग कराके एक-एक वाक्य लिखवाएँ ।

(४) संयुक्ताक्षर का अभ्यास होने के पश्चात इन पाठ्यांशों का श्रुतलेखन करवाएँ । विरामचिह्नों सहित शुद्ध लेखन पर ध्यान दें ।

● **पहचानो और बताओ :**

५. जुड़ें हम

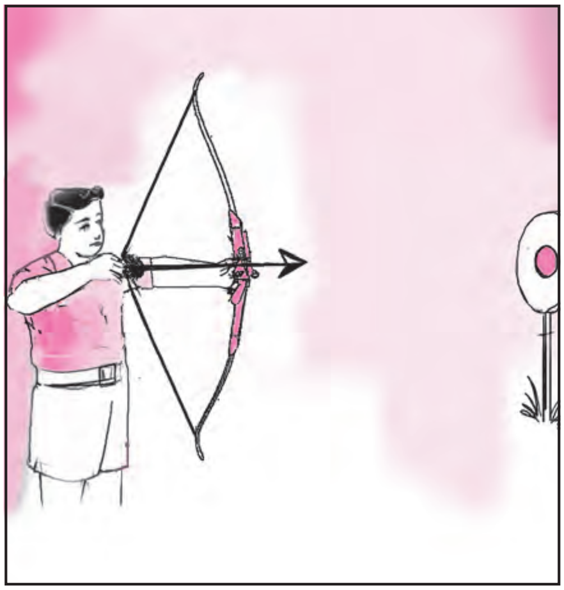

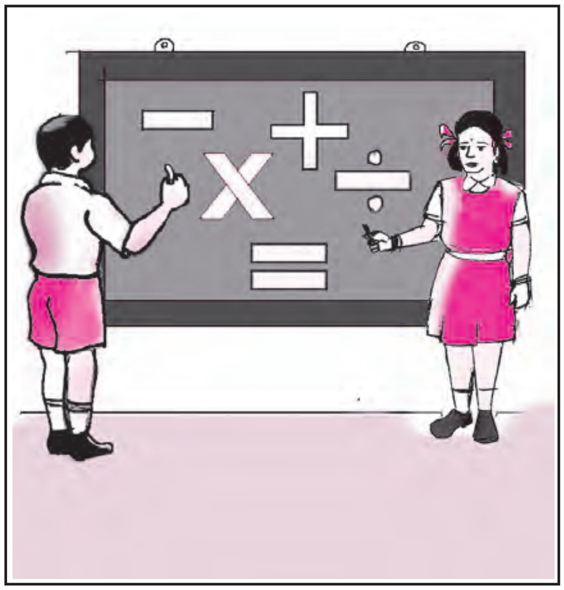

*** सुनो और दोहराओ :**

मुख्य लक्ष्य पर ध्यान लगाओ ।

प्रह्लाद, विद्या चिह्न बनाओ ।

१. पढ़ो :

पाई हटाकर जुड़ें हम

ग्वाला	पुष्प
गुच्छा	डिब्बा
चप्पल	पत्थर

हल लगाकर जुड़ें हम

सिद्धू	द्वार
लड्डू	खट्टा
बाह्य	वाङ्मय

K7YFRJ

२. मुखर वाचन करो और अनुलेखन करो :

सोआ, मेथी, पालक, चौलाई; हरी सब्जियाँ मन को भाएँ ।
बैंगन, कुम्हड़ा, लहसुन, प्याज; गाजर, मूली बहुत लुभाएँ ।
ककड़ी, मटर, आलू लाओ; लाल टमाटर को मित्र बनाओ ।
चुकंदर, भुट्टा, कद्दू खाओ; हर बीमारी को दूर भगाओ ।।

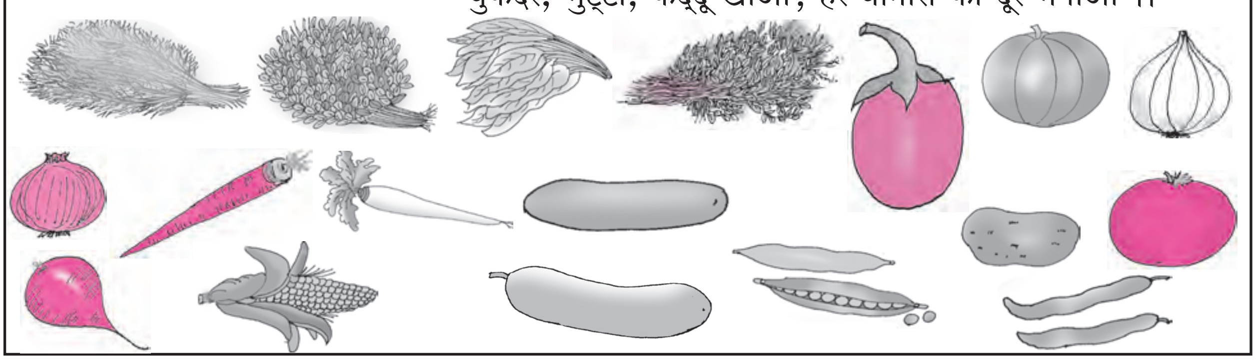

❑ इस पृष्ठ का अध्यापन करने से पहले पृष्ठ २२ पर दिए गए अध्यापन संकेत पढ़कर विद्यार्थियों से अभ्यास करवाएँ । चित्रों को पहचानकर सब्जियों के नाम कहलवाएँ । आवश्यकतानुसार सहायता करें । दैनिक उपयोग की अन्य वस्तुओं के नाम कहलवाएँ ।

● पहचानो और बताओ :

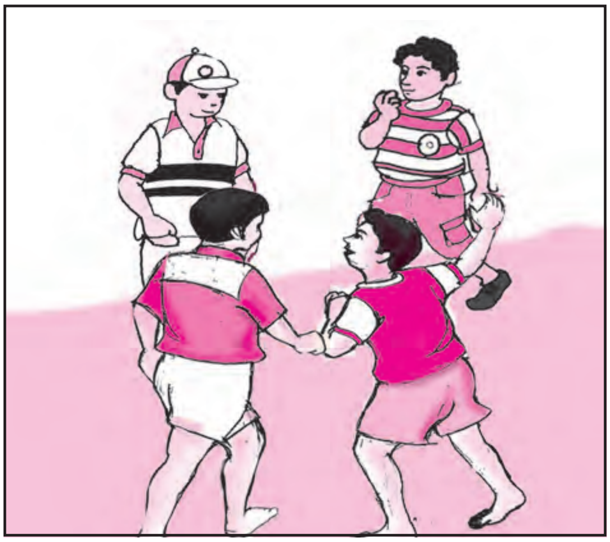

✻ सुनो और दोहराओ :

अक्खड़, फक्कड़, गफ्फार, उत्तम । अग्रसर महाराष्ट्र सर्वोत्तम ।

१.पढ़ो :

आधे होकर जुड़ें हम		विभिन्नता से जुड़ें हम	
मक्खी	सिक्का	दर्जी	गंधर्व
रफ्तार	डॉक्टर	इंद्रधनुष	चंद्रमा
शगुफ्ता	मुजफ्फर	मेट्रो रेल	महाराष्ट्र

२.मौन वाचन करो और आपस में श्रुतलेखन करो :

१. सेवा डॉक्टर का कर्तव्य है ।
२. पौधे लगाओ, प्रदूषण हटाओ ।
३. राष्ट्रीय संपदा, स्वच्छ रखें सर्वदा ।
४. मक्खी, मच्छर भगाओ, रोग मिटाओ ।
५. रक्तदान-जीवनदान, नेत्रदान-श्रेष्ठ दान ।
६. विश्वास रखो, अंधविश्वास नहीं ।
७. बेईमानी ठुकराओ, ईमानदारी अपनाओ ।
८. इंद्रधनुष के रंगों की तरह मिलकर रहो ।

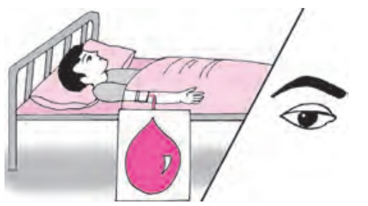

❑ इस पृष्ठ का अध्यापन करने से पहले पृष्ठ २२ पर दिए गए अध्यापन संकेत पढ़कर विद्यार्थियों से अभ्यास करवाएँ । सुविचारों को समझाएँ और इसी प्रकार के सुविचारों का संग्रह करवाएँ । दैनिक व्यवहार में इनका प्रयोग करने के लिए प्रेरित करें । इंद्रधनुष के रंगों के नाम कहलवाएँ और रंगों की सूची बनवाएँ । विद्यार्थियों से रंगों और दैनिक उपयोग की वस्तुओं की जोड़ियाँ मिलवाएँ ।

● पढ़ो, समझो और बताओ :

६. बोध

आँख	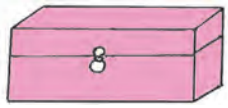 पेटी	औषधि	पपीता	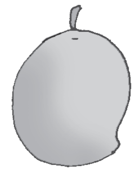 आम
आँखें	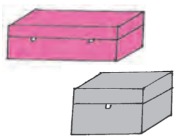 पेटियाँ	औषधियाँ	पपीते	आम
माला	सिक्का	तौलिया	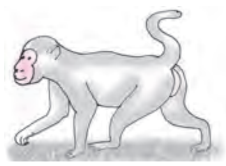 बंदर	बिल्ली
मालाएँ	सिक्के	तौलिये	बंदरिया	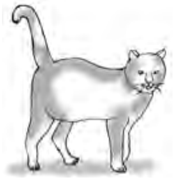 बिलाव
सिंह	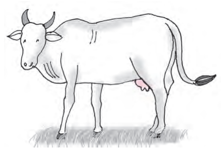 गाय	हिरन	नागिन	चुहिया
सिंहनी	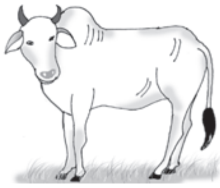 बैल	हिरनी	नाग	चूहा

❑ चित्र के माध्यम से वचन और लिंग बोधक शब्द समझाएँ । **परिभाषा नहीं बतानी है ।** अन्य उदाहरण देकर विद्यार्थियों से दृढ़ीकरण करवाएँ । एकवचन-बहुवचन और स्त्रीलिंग-पुल्लिंग से संबंधित अन्य शब्दों का लेखन करवाएँ । पाठ्यपुस्तक में आए इसी प्रकार के अन्य शब्दों को ढूँढ़ने और लिखने के लिए कहें । विद्यार्थियों को सामान्य बातचीत में ऐसे शब्दों के प्रयोग करने हेतु प्रेरित करें ।

● आकारों के नाम बताओ :

७. मुझे पहचानो

❑ गणितीय आकारों (वर्ग, आयत, त्रिभुज, षटकोण, शंकु आकार, वृत्त, बेलनाकार) की दैनिक उपयोग की वस्तुओं के नाम कहलवाएँ ।

● **समझो और लिखो :**

८. मुझे जानो

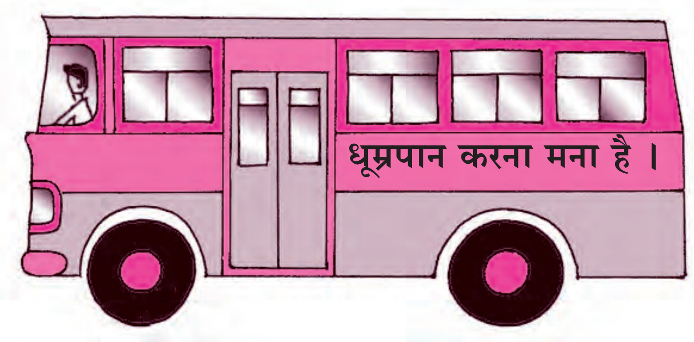

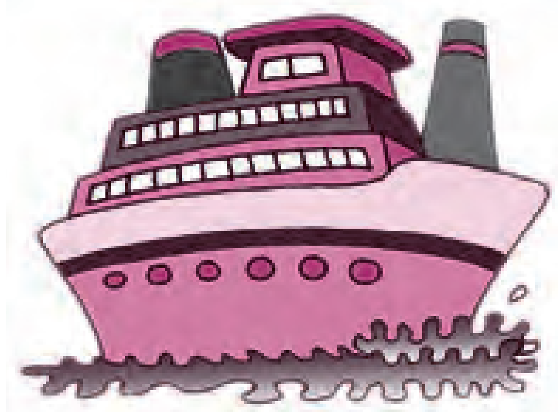

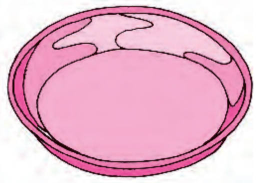

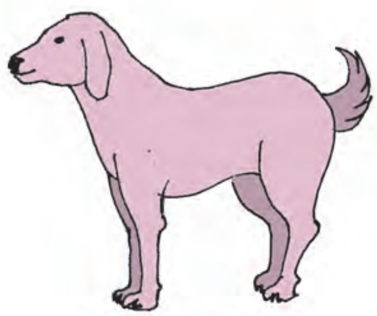

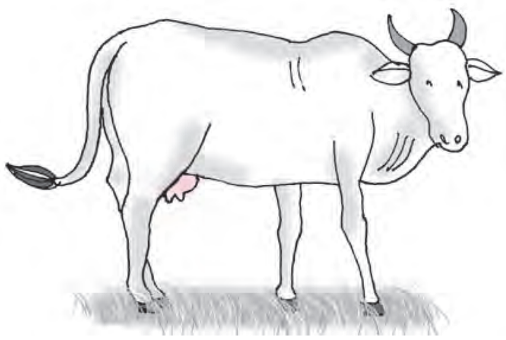

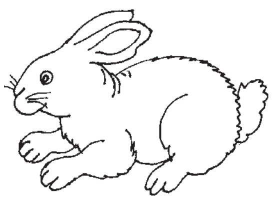

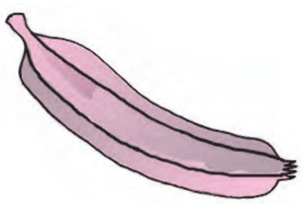

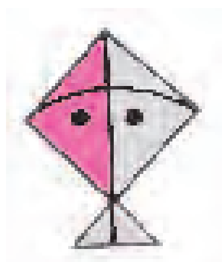

❑ ऊपर दिए गए चित्रों के नाम देवनागरी (हिंदी) एवं रोमन (अंग्रेजी) लिपि में लिखवाएँ । जैसे - **जहाज = jahaj** आदि ।

● **पढ़ो और गाओ :**

९. भारत

जग में सुंदर, विशाल, अनुपम एक अजूबा ।
भारत जैसा देश नहीं है, इस दुनिया में दूजा ।।
सुबह सुनहली किरणें आकर,
खिड़की खोल जगातीं ।
मुँड़ेर पर कोयल-चुनमुन,
राग प्रभाती गातीं ।
कामकाज में जुटा हुआ है, देखो देश समूचा ।
भारत जैसा देश नहीं है, इस दुनिया में दूजा ।।
सच्चे मन से गले लगाकर,
हम हैं प्रेम जताते ।
लेकिन जो भी आँख दिखाता,
उसको सबक सिखाते ।
प्रगति पथ पर बढ़ते, करते श्रम की पूजा ।
भारत जैसा देश नहीं है, इस दुनिया में दूजा ।।

- डॉ. मधुसूदन साहा

पंक्तियों को क्रम से लगाओ और पढ़ो :

१. इस दुनिया में दूजा ।
२. प्रगति पथ पर बढ़ते,
३. करते श्रम की पूजा ।
४. भारत जैसा देश नहीं है,

KBZYH5

❑ उचित हाव-भाव से कविता का पाठ करें । विद्यार्थियों से समूह, गुट एवं एकल रूप में कई बार सस्वर पाठ करवाएँ । उनसे छोटे-छोटे प्रश्न पूछें । लोरी, प्रयाण गीत पढ़ने के लिए प्रेरित करें । अपने देश का महत्त्व समझाएँ और इसकी विशेषताओं पर चर्चा करें ।

● पढ़ो, समझो और दोहराओ :

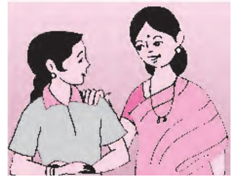

१०. उलझन

रमा कई दिनों से परेशान-सी लग रही थी । माँ से उसकी यह उलझन छिपी नहीं थी । रात में रमा खाना खाकर पढ़ने की बजाय अपने पलंग पर लेटी छत देख रही थी । बेटी के पास बैठते हुए माँ ने पूछा, ''बेटा, कई दिनों से देख रही हूँ कि तुम कुछ परेशान हो । क्या बात है ?''

''माँ, हम लोग परीक्षा के बाद हमेशा कहीं-न-कहीं घूमने जाते हैं। उसमें बहुत पैसा खर्च होता है न ! कितना होता होगा ?'' हिचकते हुए रमा ने पूछा । माँ के अधरों पर मुसकान तैर गई, ''तो तुम खर्च को लेकर परेशान हो ?'' रमा बोली, ''नहीं माँ, हम लोग इस बार अगर कहीं न जाएँ तो क्या वह पैसा मुझे मिल सकता है ?'' ''तुम्हें इतने पैसों की क्या जरूरत आ पड़ी ?'' माँ की आवाज में आश्चर्य था । ''माँ, सुलक्षणा की माँ की तबीयत ठीक नहीं है । डॉक्टर ने ऑपरेशन के लिए कहा है । आपको मालूम है कि बड़ा परिवार होने के कारण उनका खर्च पूरा नहीं पड़ता । गरीबी के कारण वे इलाज नहीं करा सकते । मैं सोच रही थी कि ये पैसे उनके काम आ जाएँगे ।'' रमा बोली ।

माँ ने कहा, ''बहुत सारे डॉक्टर पापा के मित्र हैं । तुम कल ही सुलक्षणा से कहना कि वह अपनी माँ को लेकर आ जाए । उनका इलाज हम लोग करवाएँगे ।'' ''सच माँ, तुम कितनी अच्छी हो !'' रमा की आँखों में खुशी छलक उठी थी । रमा के माथे को चूमती हुई माँ बोलीं, ''मेरी बेटी सबसे अच्छी है क्योंकि उसका दिल दूसरों की तकलीफ से दुखी होता है ।'' सुनकर रमा का मन खिल उठा ।

– नीलम राकेश

सही (√) या गलत (×) चिह्न लगाओ और मोटे अक्षरों में छपे क्रिया के काल को समझो :

१. रमा कई दिनों से परेशान **थी** । ( )
२. पापा का कोई भी मित्र डॉक्टर नहीं **है** । ( )
३. उनका इलाज हम लोग नहीं **करवाएँगे** । ( )
४. उसका दिल दूसरों की तकलीफ से दुखी **होता है** । ( )

K99UI5

❑ विद्‌यार्थियों को कहानी सुनाएँ और क्रमशः दो-दो पंक्तियों का वाचन करके दोहरवाएँ । विद्‌यार्थियों से छोटे परिवार के महत्व पर चर्चा करें । वर्तमानकाल, भूतकाल और भविष्यकाल को उदाहरणों द्‌वारा समझाएँ । विद्‌यार्थियों को बंधुता, समता संबंधी कहानियाँ सुनाएँ ।

● **पढ़ो और बोलो :**

११. राष्ट्रीय त्योहार

(विद्‍यार्थी कक्षा में राष्ट्रीय त्योहारों पर चर्चा कर रहे हैं ।)

ज्ञान : स्वतंत्रता दिवस एवं गणतंत्र दिवस हमारे राष्ट्रीय त्योहार हैं ।

आकांक्षा : अमर सपूतों के अथक प्रयासों से १५ अगस्त १९४७ को हमारा देश स्वतंत्र हुआ ।

त्र्यंबक : यह दिन स्वतंत्रता दिवस के रूप में मनाया जाता है ।

ज्ञान : आजादी मिलने के बाद बड़ी लगन से देश का संविधान बनाया गया तथा २६ जनवरी १९५० को इसे देश में लागू किया गया ।

आकांक्षा : इसीलिए २६ जनवरी का दिन गणतंत्र दिवस के रूप में मनाया जाता है ।

क्षितिज : २६ जनवरी और १५ अगस्त के दिन और क्या-क्या होता है ?

ज्ञान : राष्ट्रीय त्योहारवाले दिन राष्ट्रध्वज फहराते हैं । राष्ट्रगीत गाते हैं । राज्य, जिला, शहर, गाँव, तथा विद्‍यालयों में इन त्योहारों को धूमधाम से मनाते हैं । प्रभात फेरियाँ निकालते हैं । जगह-जगह सजावट और रोशनी की जाती है ।

क्षितिज : यह आजादी बड़े संघर्षों के बाद मिली है । हमें इसकी रक्षा करनी है ।

त्र्यंबक : हाँ ! हमें स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान को सदैव याद रखना होगा । अपने तिरंगे का सम्मान करना हमारा कर्तव्य है ।

आकांक्षा : राष्ट्रीय त्योहारों पर झंडावंदन के लिए सभी का समय पर उपस्थित होना आवश्यक है । राष्ट्रगीत के समय सदैव सावधान की मुद्रा में खड़े रहें । राष्ट्रीय त्योहार हमें पूरी निष्ठा के साथ आनंदपूर्वक मनाने चाहिए ।

उचित जोड़ियाँ मिलाओ :

१. स्वतंत्रता दिवस	१. सदैव सावधान की मुद्रा में खड़े रहें ।
२. २६ जनवरी	२. समय पर उपस्थित होना आवश्यक है ।
३. राष्ट्रगीत के समय	३. गणतंत्र दिवस
४. झंडावंदन के लिए	४. १५ अगस्त

❑ उचित आरोह-अवरोह के साथ वाचन करवाएँ । विद्‍यार्थियों से आजादी के महत्त्व पर चर्चा करें । समय पालन और अनुशासन के महत्त्व को समझाएँ । देशभक्ति के गीतों का संग्रह करने के लिए प्रेरित करें । विद्‍यार्थियों को 'जनगणमन' राष्ट्रगीत का महत्त्व बताएँ ।

● सुनो और समझो :

१२. हम अलग - रूप एक

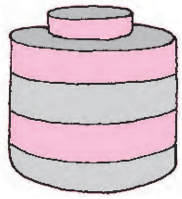 टंकी	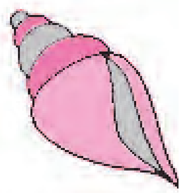 शंख	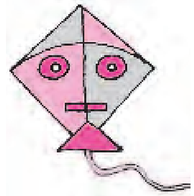 पतंग	कंघी
कंचा	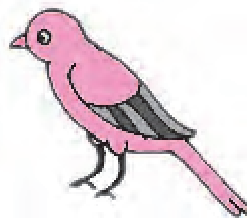 पंछी	जंजीर	झंझावात
घंटा	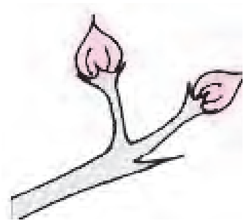 डंठल	डंडा	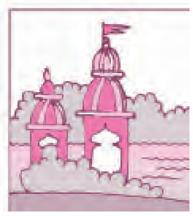 पंढरपुर
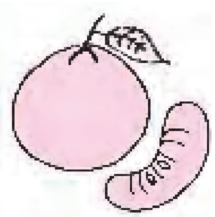 संतरा	ग्रंथ	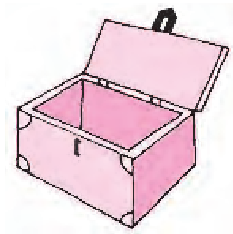 संदूक	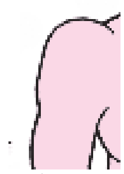 कंधा
चंपा	गुंफन	कंबल	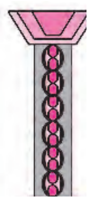 खंभा

❑ क,च,ट,त,प वर्ग के पंचमाक्षर ङ,ञ,ण,न,म हैं । ये अपने ही वर्ग के शेष चार वर्णों में से किसी भी वर्ण से मिलें तो पंचमाक्षर इनके पहलेवाले वर्ण पर अनुस्वार के रूप में ही लिखा जाता है । उदा.- शंख (शङ्‌ख), 'क' वर्ग का पंचमाक्षर 'ङ' वर्ण 'ख' से मिला है, अतः अनुस्वार पहले वर्ण 'श' पर लगा है । पंचमाक्षरयुक्त शब्दों का सामूहिक अनुकरण एवं मुखर वाचन करवाएँ । प्रत्येक विद्यार्थी को मौन वाचन करने का अवसर दें । उनसे पंचमाक्षर के प्रयोग पर चर्चा करें एवं समझाएँ । पाठ्‌यपुस्तक में आए हुए पंचमाक्षरयुक्त शब्दों को ढूँढ़ने के लिए कहें और उनका लेखन करवाएँ ।

● **पढ़ो और समझो :**

१३. (अ) समान–विरुद्ध

नेत्र 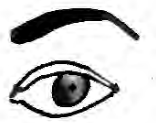 आँख	वृक्ष पेड़	पक्षी पंछी	पुष्प फूल
द्‌वार दरवाजा	चारपाई खटिया	सवेरा 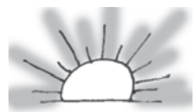 सुबह	केश बाल

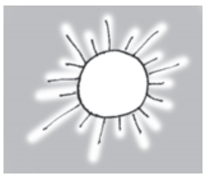 दिन	रात	ऊपर	नीचे
कम	अधिक	छोटा	बड़ा
गरम	ठंडा	सुखी	दुखी
बंद	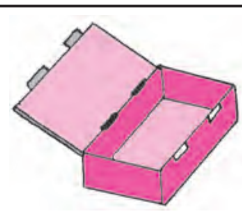 खुला	आगे	पीछे

❑ चित्र के माध्यम से समानार्थी–विरुद्‌धार्थी समझाएँ । **परिभाषा नहीं बतानी है ।** अन्य उदाहरण देकर विद्‌यार्थियों से ऐसे शब्दों का दृढ़ीकरण करवाएँ । पाठ्‌यपुस्तक में आए ऐसे शब्दों को ढूँढ़ने के लिए कहें । उनका संग्रह कराके सुलेखन और श्रुतलेखन करवाएँ ।

● **आपस में श्रुतलेखन करो :**

(ब) छुक-छुक गाड़ी

रविवार का दिन था । विद्‌यालय में छुट्‌टी थी । बच्चे अपने घरों में बैठे-बैठे तंग आ गए थे । गृहकार्य भी हो गया था । वे सभी मैदान में आ गए । बच्चों ने छुक-छुक गाड़ी का खेल खेलने का निश्चय किया । वर्ष उनमें सबसे बड़ा था । उसने कहा, ‘‘मैं एक से बीस तक सबको नाम दूँगा । सभी को क्रमानुसार डिब्बे बनकर इंजन के पीछे जुड़ना है ।’’ उसने निम्नलिखित प्रकार से नाम दिए :

एक-चैत्र, आठ-कार्तिक, पाँच-श्रावण, दो-वैशाख, सात-आश्विन, चार-आषाढ़, अठारह-शनिवार, छह-भाद्रपद, दस-पौष, पंद्रह-बुधवार, सत्रह-शुक्रवार, नौ-अग्रहायण, बारह-फाल्गुन, तीन-ज्येष्ठ, सोलह-गुरुवार, चौदह-मंगलवार, ग्यारह-माघ, तेरह-सोमवार, उन्नीस-रविवार और वर्ष स्वयं बीस बन गया । वह इंजन बना । सभी बच्चे उलटे क्रम से अपना क्रमांक और नाम बोलते हुए इंजन के पीछे जुड़ते गए । इस तरह शुरू हो गया; छुक-छुक गाड़ी का खेल । तुम सब भी छुक-छुक गाड़ी का खेल खेलो । यह खेल गरमी, वर्षा, सरदी हर मौसम में खेल सकते हो ।

लिखो :

१. सप्ताह के दिन । २. मौसम के नाम ।

३. महीनों के नाम । ४. एक से बीस तक की गिनती को अंकों और शब्दों में ।

❑ पाठ का उचित उच्चारण के साथ वाचन करें । एक-एक परिच्छेद का अनुलेखन/सुलेखन कराएँ । विद्‌यार्थियों से एक से बीस तक के अंकों का अक्षरों में श्रुतलेखन करवाएँ और आपस में एक-दूसरे की कॉपी जाँचने के लिए कहें । उनसे ऊपर के चित्रों पर नाम लिखवाएँ ।

● **समझो और बताओ :**

१४. निरीक्षण

एक ही प्रकार के दो हरे पौधे लो । एक को घर की छत, आँगन या ऐसे स्थान पर रखो जहाँ पौधे को सीधे धूप लग सके । दूसरे को कमरे में ऐसे स्थान पर रखो जहाँ धूप न आती हो । पाँच दिन बाद दोनों का निरीक्षण करो ।

तुम देखोगे कि धूप में रखा पौधा अधिक स्वस्थ है, उसके पत्ते हरे हैं जबकि दूसरे पौधे के पत्ते मुरझाए हैं और कुछ-कुछ पीले पड़ गए हैं । ऐसा क्यों हुआ ? सोचो और आपस में चर्चा करो । अपना निष्कर्ष शिक्षक को बताओ ।

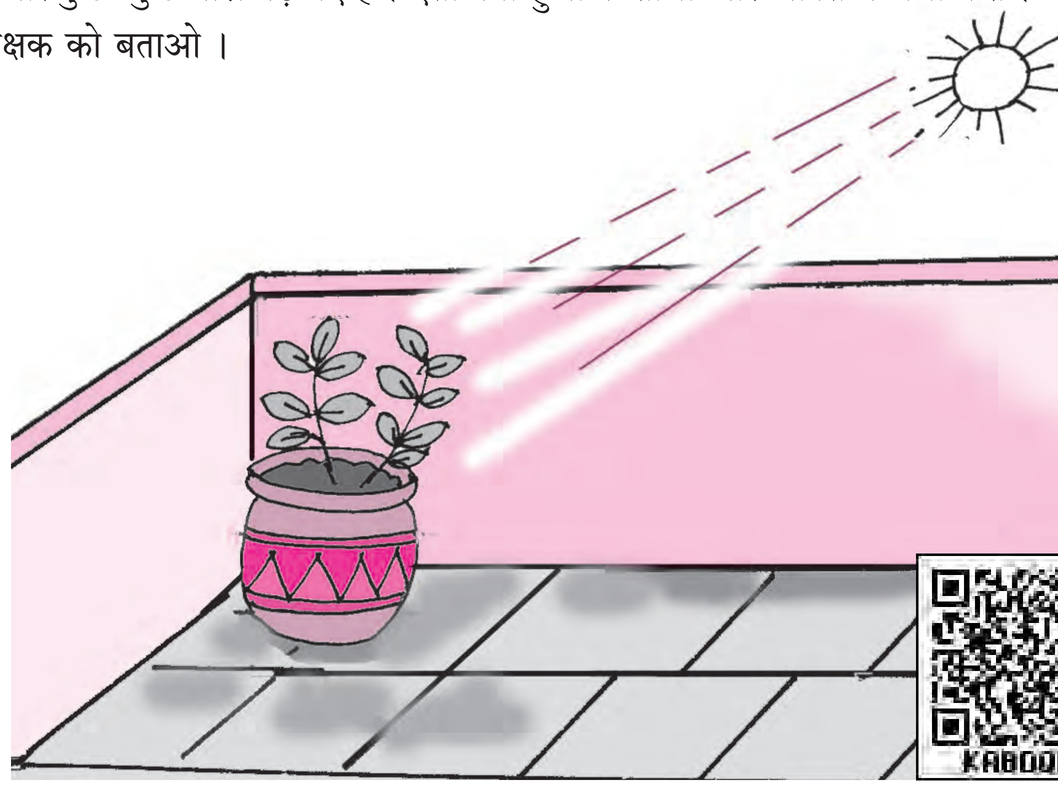

❑ विद्‍यार्थियों को प्रकृति की विविध वस्तुओं के निरीक्षण के लिए प्रोत्साहित करें और बीजांकुरण आदि अन्य प्रयोग करवाएँ ।

● **मार्ग बताओ :**

१५. चलो- चलें

❑ चित्र का निरीक्षण कराएँ । चित्र में आए सांकेतिक चिह्नों का वाचन एवं परिचय कराएँ । विद्यार्थियों से गोलू-भोलू को पेंग्विन के घर तक पहुँचाने वाले मार्ग को रेखांकित करने के लिए कहें । इसी प्रकार के अन्य सांकेतिक चिह्न बताने के लिए प्रेरित करें ।

✻ पुनरावर्तन–३ ✻

१. अनुस्वारवाले (-ं) शब्दों को सुनो, समझो और दोहराओ :

अङ्क–अंक, चञ्चल–चंचल, झण्डा–झंडा, सुन्दर–सुंदर, मुम्बई–मुंबई; टंकी, पंख, पतंग, कंघी, कंचा, पंछी, अंजीर, झंझावात, घंटी, कंठ, डंडा, पंढरपुर, संत, पंथ, बंदर, कंधा, पंप, गुंफन, कंबल, खंभा ।

२. घायल पक्षी को देखकर तुम्हारे मन में कौन–से भाव उठते हैं, बताओ ।

३. पढ़ो और समझो :

(क) **मैं** पाँचवीं कक्षा **में** पढ़ रहा हूँ ।

(ख) मृणाल ने पूछा, ''उदय ! **कहाँ** गए थे ?'' उदय ने **कहा,** ''मैं भोपाल गया था ।''

(ग) रौनक बिल्ली की **ओर** दौड़ा **और** वह भाग गई ।

(घ) राजू खेल रहा **है** । उसके साथी बैठे **हैं** ।

(च) सोहन **की** बिल्ली इतनी प्यारी है **कि** सब उसे उठा लेते हैं ।

४. उचित शब्द बनाकर लिखो :

ख आँ	र पै	न का	ठ हों
ज ग का	ट ना घु	र द बं	त र भा
ई र पा चा	व ली दी पा	ला शा ठ पा	वा ल री फु

५. वर्ण अवयवों का उपयोग करते हुए अपने मन से उनके चित्र बनाओ :

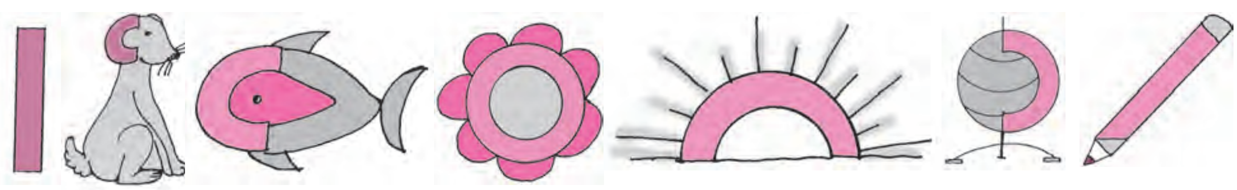

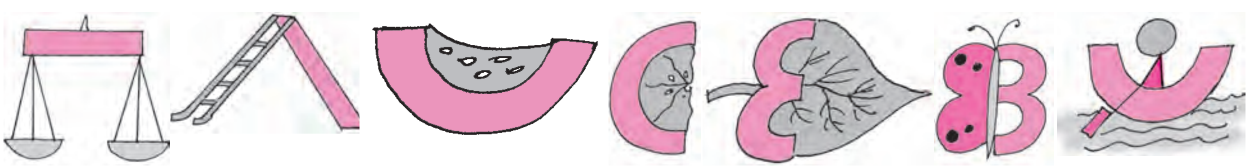

कृति/उपक्रम

विद्यालय में पहले दिन के अपने अनुभव सुनाओ ।

किसी समारोह के बारे में पाँच वाक्य बोलो ।

पंचतंत्र/हितोपदेश की कहानियाँ पढ़ो ।

एक चित्र बनाओ और उसका वर्णन दो–तीन वाक्यों में लिखो ।

✽ पुनरावर्तन–४ ✽

१. सुनो और दोहराओ :

मैं हम तू तुम आप	जा	रहा/ रही हूँ । रहा/ रही है । रहे हो/ रही हो । रहे हैं/रही हैं ।

यह ये वह वे	जा	रहा है/ रही है । रहे हैं / रही हैं ।

२. तुम्हारे मित्र के पास कॉपी खरीदने के लिए पैसे नहीं हैं । तुम्हारी माँ ने मेला देखने के लिए तुम्हें तीस रुपये दिए हैं, इस स्थिति में तुम्हारे मन में कौन–से भाव जगते हैं, बताओ ।

३. पढ़ो और समझो :

विद्‌यालय : जहाँ विद्‌यार्थी पढ़ते हैं ।

खेल खेलने वाला : खिलाड़ी ।

जादूगर : जादू दिखाने वाला ।

सच बोलने वाला : सत्यवादी ।

४. सिग्नल के चित्रों का वाचन करो और सिग्नल पार करते समय तुम क्या सावधानी बरतते हो, लिखो :

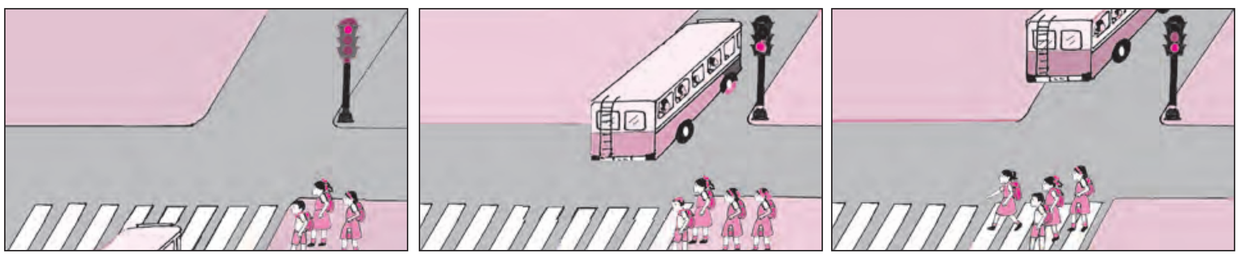

५. पढ़ाई करने के बाद भी तुम्हें परीक्षा से डर लग रहा है तो तुम क्या करोगे, बताओ :

(क) बड़ों से बातचीत करोगे । (ख) खेलने जाओगे । (ग) गाना सुनोगे अथवा गाओगे । (घ) आराम करोगे ।

कृति/उपक्रम

भारत की पाँच विशेषताएँ सुनाओ ।

परिसर में देखे हुए वृक्षों के नाम बताओ ।

तेनालीराम की कहानियाँ पढ़ो ।

तुम्हें कौन–सा खेल पसंद हैं और क्यों, लिखो ।

✻ शब्दार्थ ✻

पहली इकाई

२. **हवा** : इठलाना = इतराना; चंचल = अस्थिर; ठुमकना = नृत्य की मुद्रा में चलना; मटकना = अंग हिलाकर चलना; दुलारना = लाड़-प्यार करना; तड़के = प्रातःकाल, सवेरा ।

८. **माँ** : प्रारूप = आकार; सुरूप = सुंदर रूप; ब्रह्मांड = विश्व ।

९. **मोती जैसे दाँत** : शीत = ठंडा; झँझोड़ना = जोर से हिलाना ।

पुनरावर्तन- १ : खार = काँटा; मेघा = बादल; मेधा = बुद्धि; सेर = वजन करने की पुरानी इकाई; चारण= स्तुति करने वाला; उघाड़ = खोलना; सरपत = एक प्रकार की घास ।

पुनरावर्तन- २ : बेल = लता; ओज = तेज; छत्र = छत, छाता; रिपु = शत्रु; कसौटी = परीक्षा, जाँच, परख; झाँझ = एक तरह का ताल वाद्य ।

दूसरी इकाई

२. **लालची कुत्ता** : पटरा = लकड़ी का चौरस टुकड़ा, पाटा; हथियाना = हड़पना; भौंचक्का = आश्चर्यचकित; मुँहबाय = मुँह फैलाकर; बलाय = बला, संकट ।

३. **खिचड़ी** : कारनामा = बड़ा कार्य; हँड़िया= हंडी; आँच = गरमी ।

५. **जुड़ें हम** : अग्रसर = आगे बढ़ा हुआ; रफ्तार = गति; संपदा = संपत्ति, धन ।

९. **भारत** : अनुपम = बेजोड़; अजूबा = आश्चर्य में डालने वाला; दूजा = दूसरा; मुँड़ेर= छत के ऊपर कम ऊँचाई की दीवार; प्रभाती = सुबह के समय गाने वाला गीत ।

१३. **(ब) छुक-छुक गाड़ी** : भाद्रपद= भादों; अग्रहायण = अगहन; फाल्गुन = फागुन ।

१४. **निरीक्षण** : स्वस्थ = निरोगी, तंदुरुस्त; निष्कर्ष = निचोड़ ।

पुनरावर्तन- ३ : झंझावात = तेज आँधी; पंथ = मार्ग; गुंफन = गुँथा हुआ ।

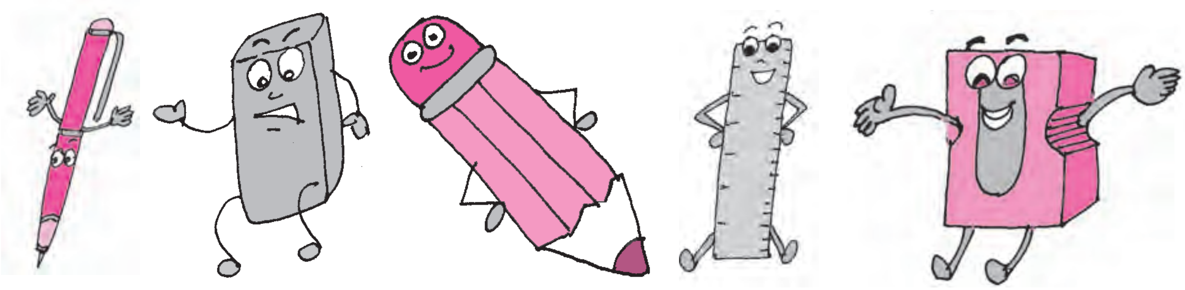

✻ उत्तर ✻

पुनरावर्तन -२, पृष्ठ क्र. १८, प्रश्न ४ का उत्तर :

आम, पीपल, कमल, नीम, अंगूर, शमी, अशोक, गुलाब, इमली, बेल, केला, गुड़हल, नारियल ।

● लिखो, पढ़ो और सुनाओ :

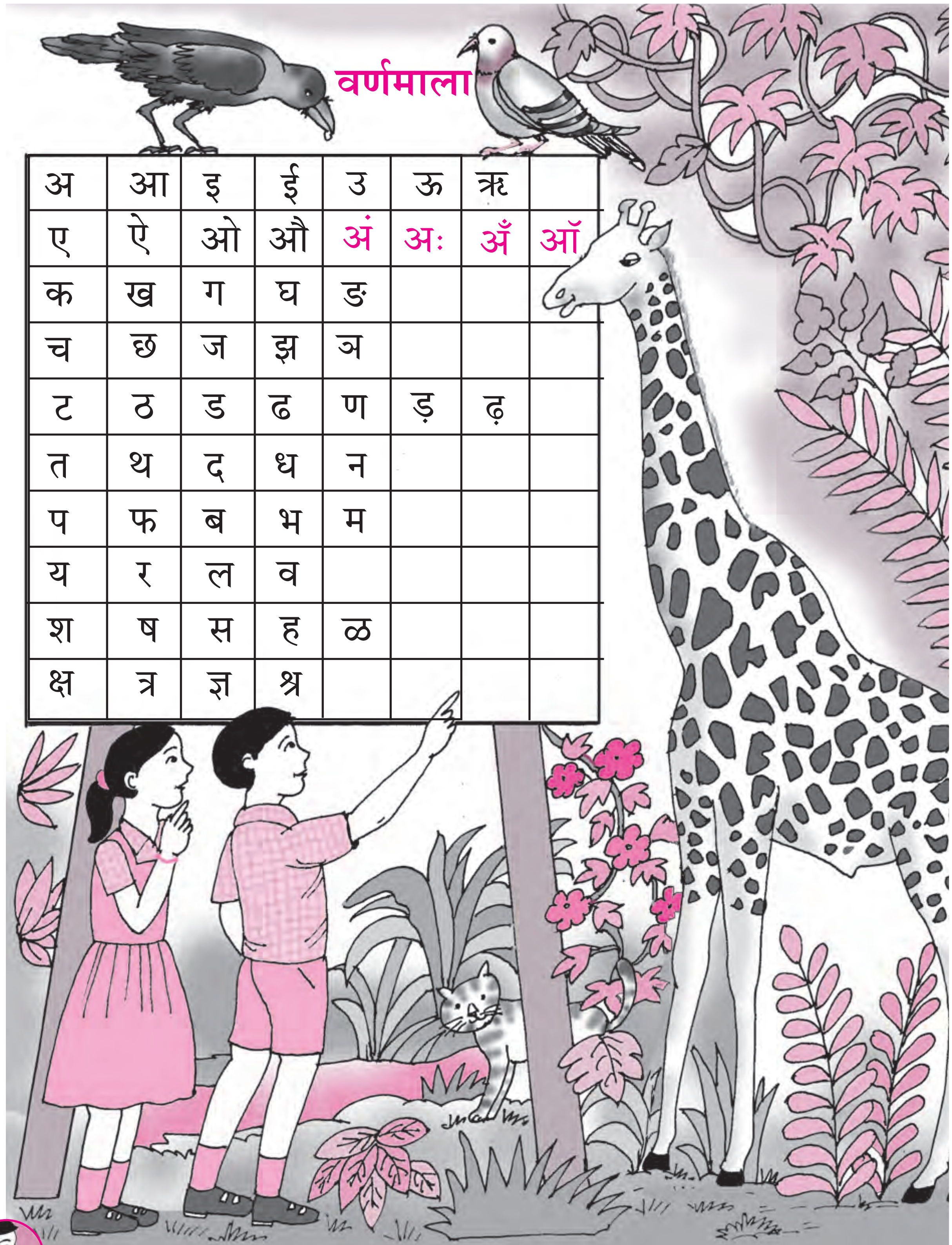

वर्णमाला

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	
ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः	अँ	ऑ
क	ख	ग	घ	ङ			
च	छ	ज	झ	ञ			
ट	ठ	ड	ढ	ण	ड़	ढ़	
त	थ	द	ध	न			
प	फ	ब	भ	म			
य	र	ल	व				
श	ष	स	ह	ळ			
क्ष	त्र	ज्ञ	श्र				

१. वर्णमाला क्रम से पढ़कर सुनाओ ।

२. 'क' की बारहखड़ी लिखकर पढ़ो ।

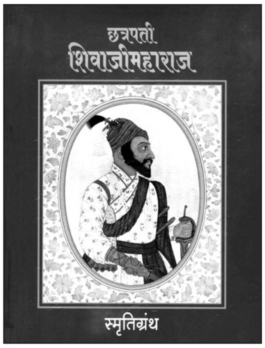

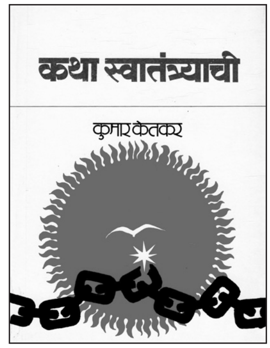

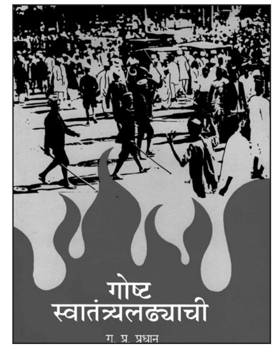

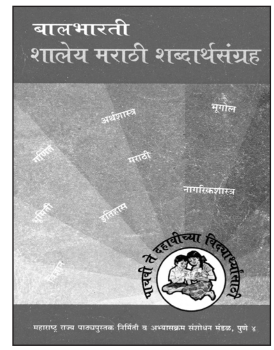

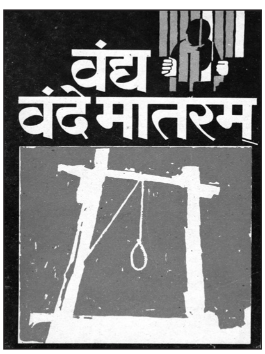

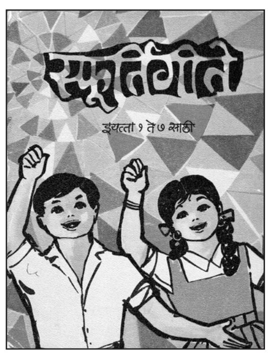

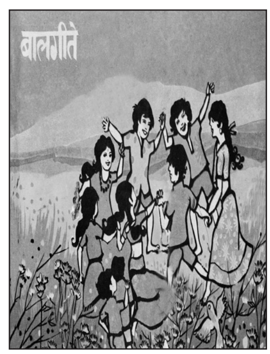

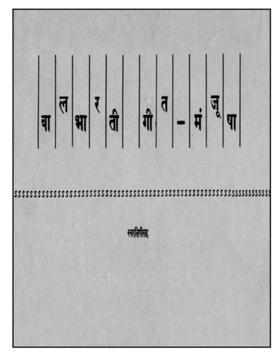

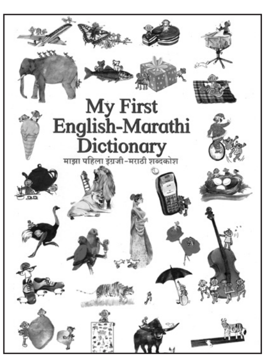

- पाठ्यपुस्तक मंडळाची वैशिष्ट्यपूर्ण पाठ्येत्तर प्रकाशने.
- नामवंत लेखक, कवी, विचारवंत यांच्या साहित्याचा समावेश.
- शालेय स्तरावर पूरक वाचनासाठी उपयुक्त.

पुस्तक मागणीसाठी www.ebalbharati.in, www.balbharati.in संकेत स्थळावर भेट द्या.

साहित्य पाठ्यपुस्तक मंडळाच्या विभागीय भांडारांमध्ये विक्रीसाठी उपलब्ध आहे.

ebalbharati

विभागीय भांडारे संपर्क क्रमांक : पुणे - ☎ २५६५९४६५, कोल्हापूर- ☎ २४६८५७६, मुंबई (गोरेगाव) - ☎ २८७७१८४२, पनवेल - ☎ २७४६२६४६५, नाशिक - ☎ २३९१५११, औरंगाबाद - ☎ २३३२१७१, नागपूर - ☎ २५४७७१६/२५२३०७८, लातूर - ☎ २२०९३०, अमरावती - ☎ २५३०९६५

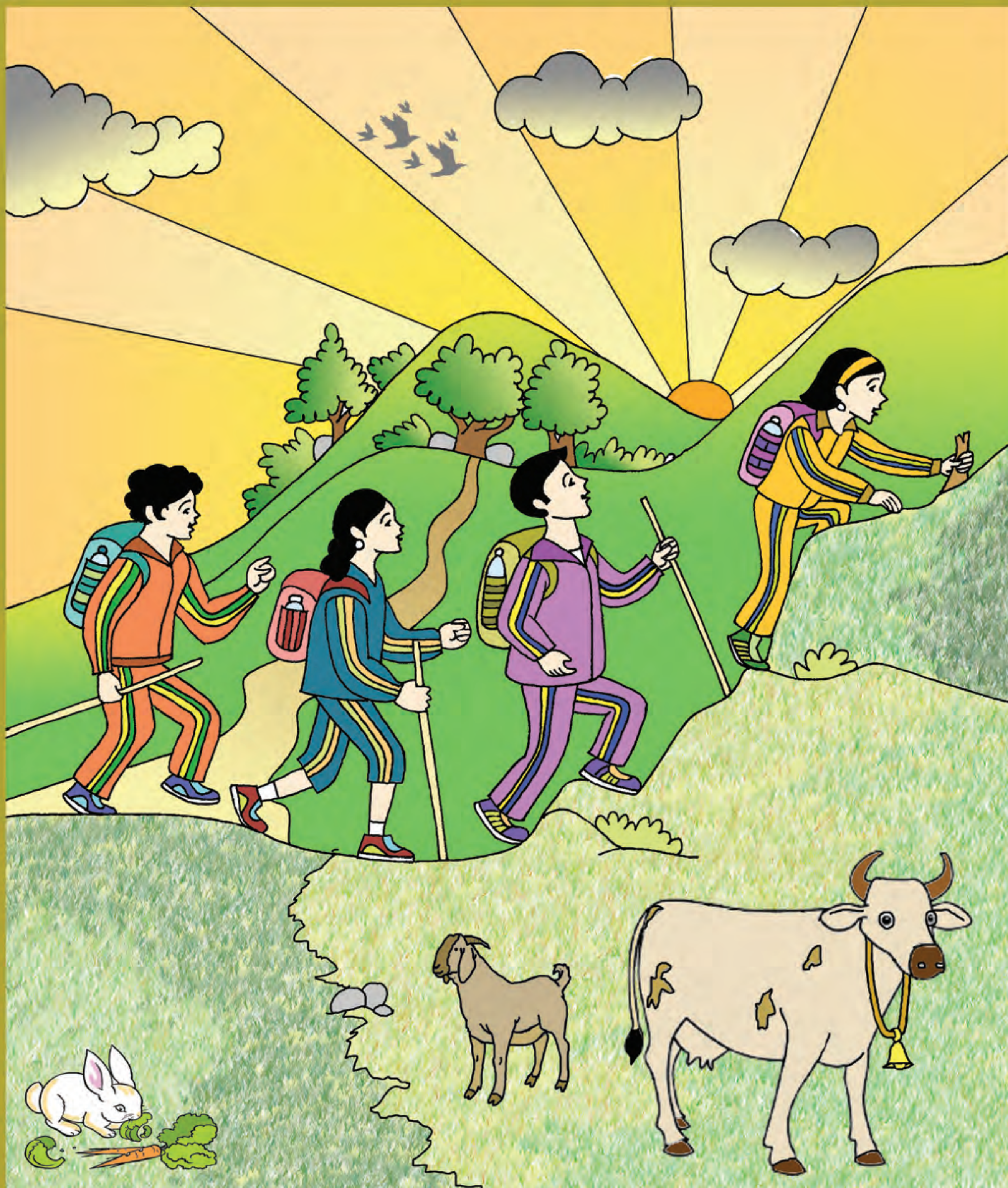

महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे.

हिंदी सुगमभारती इयत्ता पाचवी

₹ २१.००